राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण रविवार 08 फरवरी 2026 वर्ष-9,अंक-16 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कांग्रेस से भाजपा में आई, अब बनेंगी बीएमसी की बॉस

● मुंबई की नई मेयर होंगी रितु तावड़े
शिंदे की पार्टी को डिप्टी मेयर का पद

मुंबई (एजेंसी)। देश की सबसे धनी नगर निकाय बृहन्मुंबई नगर निगम में सत्ता का समीकरण अब पूरी तरह बदल गया है। शनिवार को महायुति गठबंधन ने भाजपा की वरिष्ठ पार्षद रितु तावड़े को महापौर (मेयर) और शिव सेना (शिंदे गुट) के नेता संजय शंकर घाडी को उप-महापौर पद का उम्मीदवार घोषित किया। बीएमसी के 227 सदस्यीय सदन में महायुति के पास स्पष्ट बहुमत होने के कारण रितु तावड़े का मुंबई की अगली मेयर बनना तय माना जा रहा है। महापौर और उप-

महापौर पद के लिए चुनाव 11 फरवरी को बीएमसी मुख्यालय में संपन्न होगा। रितु तावड़े मुंबई भाजपा का एक अनुभवी चेहरा हैं। वे तीसरी बार पार्षद चुनी गई हैं। उन्होंने 2012 (वार्ड 127) और 2017 (वार्ड 121) में जीत दर्ज की थी। हाल ही में 15 जनवरी 2026 को हुए चुनावों में वे घाटकोपर के वार्ड संख्या 132 से विजयी हुई हैं। वे पहले बीएमसी की महत्वपूर्ण शिक्षा समिति की अध्यक्ष रह चुकी हैं, जिससे उन्हें नागरिक प्रशासन का गहरा अनुभव है। तावड़े ने अपने करियर की शुरुआत कांग्रेस से की थी और 2012 में भाजपा में शामिल हुई थीं। यदि वे निर्वाचित होती हैं, तो लगभग 40 वर्षों के बाद मुंबई को भाजपा का अपना महापौर मिलेगा। इससे पहले 1982-83 में प्रभाकर पाई भाजपा के मेयर रहे थे। 227 सीटों वाली बीएमसी में बहुमत का आंकड़ा 114 है। वर्तमान सदन में भाजपा के पास 89, शिवसेना के पास 29 पार्षद हैं।

पप्पू यादव के समर्थन में उतरे राहुल और प्रियंका

● गिरफ्तारी को बताया नीट छात्रा मामले का बदला

पटना (एजेंसी)। पप्पू यादव के समर्थन में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी भीउतर पड़े हैं। राहुल गांधी ने कहा कि उनकी गिरफ्तारी केवल राजनीतिक प्रतिशोध की भावना से की गई है। उन्होंने कहा कि नीट छात्रा की संदिग्ध मौत को लेकर ही उन्हें गिरफ्तार किया गया है और अब डराया धमकाया जा रहा

है। शुक्रवार को देर रात पटना पुलिस ने 31 साल पुराने एक मामले में निर्दलीय सांसद पप्पू यादव को गिरफ्तार किया है। राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया,पटना में नीट की आकांक्षी छात्रा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत और उसके बाद की पूरी कार्रवाई ने एक बार फिर व्यवस्था की गहरी सड़ांध को उजागर कर दिया है। उन्होंने दावा किया कि पीड़ित परिवार ने जब निष्पक्ष जांच और न्याय की मांग की, तो वही पुराना भाजपा-राजग मॉडल सामने आ गया कि मामले को भटकाओ, परिजनों को प्रताड़ित करो और अपराधियों को सत्ता का संरक्षण दो। राहुल ने कहा, इस बेटी के लिए न्याय की आवाज़ बनकर उभर रहे थे सांसद पप्पू यादव।

22 भाषाओं में बोलेगा भारत का देसी एआई, मॉडल तैयार!

● खेती-किसानी की समस्याओं का भी मिलेगा समाधान, इसी महीने आएगा टेक्स्ट वर्जन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार देश का अपना आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मॉडल तैयार कर रही है। देश के पहले सरकारी और देसी सॉवरेन एआई मॉडल, भारत जेनएआई के तहत बनने वाले टेक्स्ट आधारित एआई मॉडल का काम इसी महीने पूरा कर लिया जाएगा। यह जानकारी केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने राज्यसभा में दी है। उन्होंने बताया कि यह एआई सिस्टम सिर्फ अंग्रेजी तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि हिंदी, तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी, उर्दू सहित देश की सभी प्रमुख भाषाओं में लोगों से संवाद कर सकेगा। वहीं, इसी का बोलने और देखने की क्षमता वाला रूप स्पीच और विजन टेक्नोलॉजी से लैस होगा। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत जेनएआई, इंडिया एआई मिशन के तहत विकसित किया जा रहा है और यह भारत का पहला राष्ट्रीय फाउंडेशनल लार्ज लैंग्वेज मॉडल होगा। इसे पूरी तरह भारतीय जरूरतों और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार डिजाइन किया गया है। प्रश्नकाल के दौरान उन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम के तहत स्पीच (बोलने) और विजन (देखने) से जुड़ी एआई क्षमताएं पहले ही 15 भारतीय भाषाओं में तैयार की जा चुकी हैं। उन्हें आगे

चरणबद्ध तरीके से और भाषाओं तक बढ़ाया जाएगा।

खेती, स्वास्थ्य और कानून में मिलेगा फायदा- सरकार के मुताबिक भारत जेनएआई का इस्तेमाल सिर्फ चैट या जानकारी देने तक सीमित नहीं रहेगा। इसका इस्तेमाल कृषि, आयुर्वेद, स्वास्थ्य सेवाओं और कानूनी सहायता जैसे क्षेत्रों में भी किया जाएगा, ताकि आम लोगों को सीधे फायदा मिल सके। इस परियोजना का नेतृत्व आईआईटी बॉम्बे कर रहा है, जिसमें आईआईटी मद्रास, आईआईटी हैदराबाद, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मंडी और आईआईटी इंदौर जैसे प्रमुख संस्थान शामिल हैं। सरकार ने इसे पूरे देश की साझी पहल बताया है।

एआई इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए हब और कंप्यूट सपोर्ट

सरकार के मुताबिक भारत जेनएआई के तीन मुख्य हिस्से हैं- टेक्स्ट, स्पीच और विजन। देशभर में 25 टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब बनाए गए हैं। एआई विकास के लिए जरूरी कंप्यूटिंग संसाधन जैसे कि जीपीयू और सर्वर आदि सब्सिडी दरों पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की जा रही है। सरकार ने 1 लाख करोड़ रुपये का रिसर्च, डेवलपमेंट एंड इनोवेशन फंड शुरू किया है, जिससे एआई और नई टेक्नोलॉजी के विकास को वित्तीय मदद मिलेगी। इसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाएगी। मंत्री ने साफ किया कि भारत जेनएआई सरकारी स्वामित्व वाला सॉवरेन सिस्टम होगा लेकिन यह आम लोगों, स्टार्टअप और संस्थानों के लिए खुला रहेगा। इसके इस्तेमाल, डेटा सुरक्षा और कीमत को लेकर नियम बनाए जा रहे हैं।

पूरा जम्मू-कश्मीर और अक्साई चिन भारत का है

● ट्रेड डील के साथ यूएस ने जारी किया अखंड भारत का नक्शा

वाशिंगटन (एजेंसी)। नई दिल्ली और वाशिंगटन के बीच शनिवार को हुए अंतरिम व्यापार समझौते की चर्चा जितनी इसके आर्थिक पहलुओं को लेकर है, उससे कहीं अधिक चर्चा अमेरिकी प्रशासन द्वारा जारी किए गए भारत के एक नक्शे को लेकर हो रही है। ट्रंप प्रशासन के इस कदम ने न केवल सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है, बल्कि कूटनीतिक गलियारों में भी बड़े संकेत दे दिए हैं। अमूमन अंतरराष्ट्रीय मंचों और पश्चिमी देशों के सरकारी नक्शों में जम्मू-कश्मीर के विवादित हिस्सों को अलग रंग या डॉटेड लाइन्स से दिखाया जाता

है। लेकिन इस बार यूएस ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव के कार्यालय द्वारा जारी नक्शे ने सबको चौंका दिया। संपूर्ण जम्मू-कश्मीर- नक्शे में पूरे जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न हिस्सा दिखाया गया है। इसमें पीओके (पीओके यानी पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर) को भी भारतीय सीमा के भीतर दर्शाया गया है। अक्साई चिन भी शामिलः सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस नक्शे में अक्साई चिन को भी भारत के हिस्से के रूप में दिखाया गया है, जिस पर वर्तमान में चीन का कब्जा है और वह इसे अपना क्षेत्र बताता है। जैसे ही यह नक्शा सार्वजनिक हुआ,यह इंटरनेट पर वायरल हो गया।

भारत ने दुनिया को दिखाई अब परमाणु वाली ताकत

● मीडियम रेंज बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-3 का सफल परीक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने अपने दुश्मनों को एक बार फिर आगाह कर दिया है। शुक्रवार को भारत ने मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-3 का सफल परीक्षण किया है। रक्षा मंत्रालय ने इस बात की जानकारी दी है। अधिकारियों ने बताया है कि इस मिसाइल का परीक्षण ओडिशा के चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज से सफलतापूर्वक किया गया। प्रक्षेपण के दौरान सभी संचालन और तकनीकी मानकों का सफलतापूर्वक सत्यापन किया गया। यह परीक्षण स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड की देख रेख में किया गया। अग्नि-3 एक परमाणु क्षमता

वाली इंटरमीडिएट-रेंज बैलिस्टिक मिसाइल है। रक्षा सूत्रों के मुताबिक इसके सफल परीक्षण ने मिसाइल सिस्टम की विश्वसनीयता की पुष्टि कर दी है। यह मिसाइल एक दो-स्टेज वाला सिस्टम है जो सॉलिड फ्यूल से चलता है। पहले स्टेज का ईंधन खत्म होने के बाद, दूसरा स्टेज शुरू होता है और मिसाइल तय रास्ते पर लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है। इससे मिसाइल की स्थिरता और सटीकता बनी रहती है। वहीं इसकी मारक क्षमता की रेंज की बात करें तो यह लगभग 3,000 से 3,500 किलोमीटर है।

मंत्री-शाह ने कर्नल सोफिया मामले में चौथी बार मांगी माफी

● सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से पहले वीडियो जारी किया, कहा-आवेश में निकले थे शब्द

भोपाल (एजेंसी)। कर्नल सोफिया को लेकर दिए बयान को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से दो दिन पहले प्रदेश के जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह ने एक बार फिर माफी मांगी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी किया है। शाह ने कहा- मैंने पहले भी कई बार कहा है, मेरा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था कि किसी महिला अधिकारी, भारतीय सेना या समाज, किसी वर्ग का अपमान हो। वे शब्द निस्संदेह मेरी भावना के अनुरूप नहीं थे। वे शब्द देश भक्ति के उत्साह, उत्तेजना और आवेश में निकले थे। गलती के पीछे की भावना को अवश्य देखा जाना चाहिए। आप सब जानते हैं कि मेरी कोई दुर्भावना नहीं थी। मैंने अंतःकरण से क्षमा याचना की। कई बार की है। आज फिर कर रहा हूं। मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक है कि मेरी छोटी से त्रुटि से ऐसा

विवाद उत्पन्न हुआ। मुझे विश्वास है कि मेरी भावनाओं को सही संदर्भ में देखा जाएगा। भारतीय सेना के प्रति मेरे मन में सदैव सम्मान रहा है और रहेगा। सार्वजनिक जीवन में रहते हुए ऐसे शब्दों की मर्यादा, संवेदनशीलता अत्यंत आवश्यक है। इस घटना से मैंने आत्ममंथन किया है। सबक लिया है। जिम्मेदारी मानता हूं। भविष्य में वाणी पर नियंत्रण रहेगा। ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी। एक बार पुनः उस मामले में आप सभी नागरिकों से, भारतीय सेना से, सब लोगों से अंतःकरण से माफी मांगता हूं।

विजय शाह ने पिछले साल महू में दिया था बयान

11 मई को इंदौर के महू के रायकुंडा गांव में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री विजय शाह संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कहा था-उन्होंने (आतंकियों ने) कपड़े उतार-उतार कर हमारे हिंदुओं को मारा और मोदी जी ने उनकी बहन को उनकी ऐसी की तैसी करने उनके घर भेजा। शाह ने आगे कहा-अब मोदी जी कपड़े तो उतार नहीं सकते। इसलिए उनकी समाज की बहन को भेजा कि तुमने हमारी बहनों को विधवा किया है तो तुम्हारे समाज की बहन आकर तुम्हें नंगा करके छोड़ेगी। देश का मान-सम्मान और हमारी बहनों के सुहाग का बदला तुम्हारी जाति, समाज की बहनों को पाकिस्तान भेजकर ले सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में एमपी सरकार को देना है जवाब

मंत्री विजय शाह के खिलाफ अभियोजन (प्रॉसीक्यूशन) की मंजूरी के मामले में मध्यप्रदेश सरकार को 9 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट में अपना जवाब दाखिल करना है। इससे पहले कोर्ट ने राज्य सरकार को 15 दिन के भीतर निर्णय लेने के निर्देश दिए थे। सरकारी और राजनीतिक सूत्रों के मुताबिक, राज्य सरकार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट से और समय मांग सकती है। तर्क यह दिया जाएगा कि मामले की जांच अभी पूरी नहीं हुई है और विस्तृत परीक्षण जरूरी है। यही रुख शुरुआत से मामले की जांच कर रही विशेष जांच टीम का भी रहा है।

भारत पर अमेरिकी एक्स्ट्रा टैरिफ खत्म, बड़ी उपलब्धि

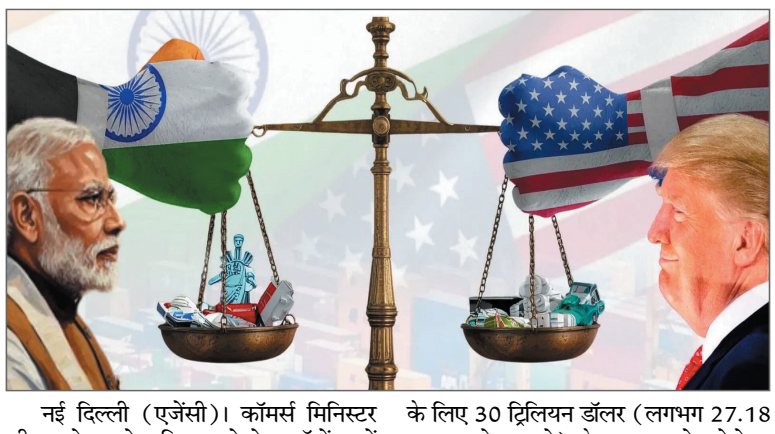

गोयल बोले-अमेरिका में भारतीय कृषि उत्पादों पर जीरो ड्यूटी

किसानों-मछुआरों को बड़ा फायदा होगा, आखिर बन गई बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉमर्स मिनिस्टर पीयूष गोयल ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के फ्रेमवर्क की घोषणा की तारीफ की। उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि उत्पाद अमेरिका में जीरो टैरिफ पर निर्यात किए जाएंगे, जबकि अमेरिका के कृषि उत्पादों को भारत में कोई टैरिफ छूट नहीं दी गई है। पीयूष गोयल ने साफ किया कि इस समझौते में जेनेटिकली मॉडिफाइड फूड को भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली है। उन्होंने कहा- यह समझौता भारतीय निर्यातकों के लिए 30 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 27.18 लाख करोड़ रुपये) के बाजार को खोलेगा। इसके अलावा भारत ने अगले 5 साल में अमेरिका से 50 हजार करोड़ डॉलर (45 लाख 30 हजार करोड़ रुपये) के उत्पाद खरीदने पर सहमति जताई है। भारत और अमेरिका ने शुक्रवार को अंतरिम व्यापार समझौते का फ्रेमवर्क जारी किया है। इसके तहत भारतीय सामान पर अमेरिका का टैक्स 50 फीसदी घटाकर 18 फीसदी कर दिया गया है। रूस से तेल खरीदने को लेकर भारत पर लगाया गया 25 फीसदी अतिरिक्त टैक्स भी हटा लिया गया है।

भारत-अमेरिका बाजार पहुंच, सप्लाई चेन को मजबूत करेंगे

समझौते में साफ किया गया है कि भारत में जेनेटिकली मॉडिफाइड खाद्य पदार्थों को अनुमति नहीं दी जाएगी। मसाले, चाय, कॉफी, नारियल तेल, काजू, एवोकाडो, केला, आम, अनानास, मशरूम जैसे कई फल-सब्जियां और कुछ बेकरी उत्पाद भी अमेरिका में जीरो टैरिफ पर निर्यात हो सकेंगे। यह द्विपक्षीय व्यापार समझौता 2030 तक भारत-अमेरिका व्यापार को 50 हजार करोड़ डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य रखता है। दोनों देशों ने कहा कि इस फ्रेमवर्क को जल्द लागू किया जाएगा और व्यापक द्विपक्षीय व्यापार समझौते की दिशा में बातचीत आगे बढ़ेगी। भारत-अमेरिका के संयुक्त बयान के मुताबिक, यह फ्रेमवर्क 13 फरवरी 2025 को शुरू हुई भारत-अमेरिका वार्ता को आगे बढ़ाएगा। इस समझौते में आगे चलकर बाजार पहुंच, सप्लाई चेन को मजबूत करने और ट्रेड बैरियर कम करने जैसे प्रावधान शामिल होंगे।

नॉन-टैरिफ बाधाओं को दूर करेंगे दोनों देश

पीयूष गोयल ने बताया कि दोनों देशों ने फैसला किया है कि वे इसके कुछ नियम तय करेंगे, ताकि इस समझौते का लाभ मुख्य रूप से अमेरिका और भारत को ही मिले, न कि किसी तीसरे देश को। भारत और अमेरिका का इस व्यापार समझौते में नॉन-टैरिफ बैरियर्स को दूर करने पर खास फोकस है। ये बाधाएं टैरिफ नहीं होतीं, लेकिन व्यापार को मुश्किल बनाती हैं। अमेरिकी मेडिकल डिवाइसेस कंपनियों को भारत में कीमत तय करने के नियम, रजिस्ट्रेशन में देरी जैसी रुकावटों का सामना करना पड़ा रहा था। भारत ने वादा किया है कि इन लंबे समय से चली आ रही बाधाओं को दूर करेगा, ताकि अमेरिकी मेडिकल डिवाइस आसानी से भारत में बिक सकें। इससे भारतीय अस्पतालों और मरीजों को बेहतर और सस्ती अमेरिकी तकनीक मिल सकती है। अमेरिकी उत्पाद के आयात के लिए भारत में लाइसेंस की प्रक्रिया बहुत जटिल और समय लेने वाली थी। भारत ने सहमति जताई है कि इन लाइसेंस प्रक्रियाओं को आसान और तेज करेगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

स्क्रीन में सिमटती दुनिया और कमजोर होती बचपन की नजर

मायोपिया की समस्या को समझना जरूरी है। जब बच्चा लगातार पास की चीजों, जैसे मोबाइल स्क्रीन या किताब, पर ध्यान केंद्रित करता है तो आंखों की मांसपेशियां उसी स्थिति में ढलने लगती हैं। धीरे-धीरे आंख की संरचना में बदलाव आने लगता है और दूर की वस्तुएं धुंधली दिखाई देने लगती हैं। शुरुआत में यह समस्या हल्की होती है, लेकिन समय के साथ चश्मे का नंबर बढ़ता चला जाता है।

(लेखक - कांतिलाल मांडोतल)

कभी बेंगलूरू जैसे शहरों में सुबह की शुरुआत खुली हवा, पेड़ों की हरियाली और दूर तक फैले मैदानों को निहारते हुए होती थी। आंखें सहज रूप से दूर तक देख लेती थीं, नजरें बिना किसी दबाव के काम करती थीं। लेकिन बीते एक दशक में यह दृश्य तेजी से बदला है। अब बच्चों और किशोरों की दुनिया कुछ इंच की स्क्रीन में सिमट गई है। मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप ने ज्ञान, मनोरंजन और संवाद को बेहद आसान बना दिया है, लेकिन इसी सुविधा की कीमत हमारी आंखें चुका रही हैं। आंखें, जो प्रकृति के हिसाब से दूर देखने और खुले वातावरण में काम करने के लिए बनी हैं, अब लगातार पास की चीजों पर टिके रहने को मजबूर हैं। इसका असर यह हुआ है कि कम उम्र में ही नजर से जुड़ी समस्याएं, खासकर मायोपिया यानी निकट दृष्टि दोष, तेजी से बढ़ रहा है।

नेत्र रोग विशेषज्ञों का मानना है कि यह केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक उभरता हुआ सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम, शारीरिक सक्रियता की कमी और असंतुलित जीवनशैली ने मिलकर बच्चों की आंखों पर ऐसा दबाव डाला है, जिसकी भरपाई आगे चलकर बेहद मुश्किल हो सकती है। हाल के स्वास्थ्य कार्यक्रमों और अध्ययनों में लाखों बच्चों की जांच के दौरान यह सामने आया है कि दृष्टि संबंधी समस्याएं अब अपवाद नहीं रहीं, बल्कि सामान्य होती जा रही हैं। यह स्थिति इसलिए और चिंताजनक है क्योंकि बच्चों की आंखें अभी विकास की अवस्था में होती हैं और इस दौरान पड़ने वाला नकारात्मक प्रभाव जीवनभर साथ रह सकता है।

मायोपिया की समस्या को समझना जरूरी है। जब बच्चा लगातार पास की चीजों, जैसे मोबाइल स्क्रीन या किताब, पर ध्यान केंद्रित करता है तो आंखों की मांसपेशियां उसी स्थिति में ढलने लगती हैं। धीरे-धीरे आंख की संरचना में बदलाव आने लगता है और दूर की वस्तुएं धुंधली दिखाई देने लगती हैं। शुरुआत में यह समस्या हल्की होती है, लेकिन समय के साथ चश्मे का नंबर बढ़ता चला जाता है। कई मामलों में किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते बच्चों को मोटे लेंस लगाने पड़ते हैं। यह केवल देखने की समस्या नहीं है, बल्कि सिरदर्द, आंखों में जलन, थकान और ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई जैसी परेशानियां भी साथ आती हैं।

स्क्रीन की लत का एक और गंभीर पहलू ड्राई आई सिंड्रोम है, जो पहले वयस्कों में ज्यादा देखा जाता था, लेकिन अब बच्चों में भी आम हो रहा है। जब हम स्क्रीन देखते हैं तो सामान्य से कम पलक झपकाते हैं। इससे आंखों की सतह सूखने लगती है, जलन और लालिमा बढ़ती है। लंबे समय तक ऐसा रहने पर आंखों की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली कमजोर पड़ सकती है। इसके अलावा, नीली रोशनी का अत्यधिक संपर्क आंखों की रेटिना पर भी नकारात्मक असर डाल सकता है, जिससे भविष्य में गंभीर समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है।

इस पूरी तस्वीर में सबसे ज्यादा चिंता की बात शिशुओं और छोटे बच्चों को मोबाइल और टीवी दिखाने की बढ़ती प्रवृत्ति है। कई अभिभावक बच्चे को शांत रखने या व्यस्त रखने के लिए स्क्रीन का सहारा लेते हैं। लेकिन विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि यह आदत बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और दृष्टि विकास तीनों पर नकारात्मक असर डाल सकती है। शुरुआती वर्षों में बच्चे की आंखें और मस्तिष्क तेजी से विकसित होते हैं। इस दौरान स्क्रीन पर निर्भरता उनके प्राकृतिक सीखने की प्रक्रिया को बाधित करती है। आंखें गहराई, दूरी और गति को पहचानने का अभ्यास नहीं कर पातीं, जो आगे चलकर देखने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

प्राकृतिक रोशनी की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कई अध्ययनों में यह साफ तौर पर सामने आया है कि जो बच्चे रोजाना पर्याप्त समय बाहर धूप में बिताते हैं, उनमें मायोपिया का जोखिम कम होता है। धूप में रहने से शरीर में विटामिन-डी का स्तर बेहतर होता है और आंखों में डोपामाइन का स्राव बढ़ता है, जो आंख की लंबाई को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके विपरीत, बंद कमरों में सीमित रहना और ज्यादातर समय स्क्रीन के सामने बिताना आंखों को उनके प्राकृतिक वातावरण से दूर कर देता है। आज का शहरी जीवन बच्चों को खुले में खेलने से भी वंचित कर रहा है। पढ़ाई का दबाव, सुरक्षा की चिंता और डिजिटल मनोरंजन की उपलब्धता ने खेल के मैदानों को खाली कर दिया है। नतीजा यह है कि बच्चे न सिर्फ शारीरिक रूप से कम सक्रिय हो रहे हैं, बल्कि उनकी आंखों को भी वह राहत नहीं मिल पा रही, जिसकी उन्हें जरूरत है। आंखों के लिए दूर तक देखना एक तरह का व्यायाम है, जो उन्हें स्वस्थ रखता है। जब यह अभ्यास बंद हो जाता है तो आंखें कमजोर पड़ने लगती हैं।

दूरगामी परिणामों की बात करें तो यह समस्या केवल चश्मे तक सीमित नहीं रहती। उच्च स्तर का मायोपिया भविष्य में रेटिना डिटैचमेंट, ग्लूकोमा और मैक्युलर डिजनरेशन जैसी गंभीर आंखों की बीमारियों का खतरा बढ़ा सकता है। इसका मतलब है कि जो समस्या बचपन में शुरू होती है, वह वयस्कता में अंधेपन तक का कारण बन सकती है। इसके अलावा, कमजोर नजर का असर बच्चे के आत्मविश्वास, पढ़ाई और सामाजिक व्यवहार पर भी पड़ता है। बार-बार आंखों की थकान और सिरदर्द से जूझता बच्चा पढ़ाई में

पिछड़ सकता है और खेलकूद से दूर हो सकता है।

अभिभावकों की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में बेहद अहम है। बच्चों को पूरी तरह तकनीक से दूर रखना संभव नहीं है और न ही यह व्यावहारिक है। लेकिन संतुलन बनाना जरूरी है। स्क्रीन टाइम को सीमित करना, बीच-बीच में आंखों को आराम देना और बच्चों को बाहर खेलने के लिए प्रोत्साहित करना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। भोजन में हरी सब्जियां, फल और पोषक तत्व शामिल करना भी आंखों की सेहत के लिए जरूरी है। साथ ही, समय-समय पर आंखों की जांच करवाना समस्याओं को शुरुआती चरण में पकड़ने में मदद करता है। समाज और शिक्षा व्यवस्था को भी इस दिशा में सोचने की जरूरत है। स्कूलों में लंबे समय तक डिजिटल पढ़ाई के बजाय मिश्रित तरीकों को अपनाया जाना चाहिए, जहां स्क्रीन और किताब दोनों का संतुलित उपयोग हो। बच्चों को आंखों की देखभाल के बारे में जागरूक करना और खुले में गतिविधियों के लिए समय निर्धारित करना भविष्य की पीढ़ी की दृष्टि बचाने की दिशा में बड़ा कदम हो सकता है।

यह समझना जरूरी है कि तकनीक अपने आप में बुरी नहीं है, लेकिन उसका अनियंत्रित उपयोग हमारी सबसे कीमती इंद्रियों में से एक, आंखों, को नुकसान पहुंचा रहा है। अगर आज हमने इस पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाले वर्षों में एक ऐसी पीढ़ी सामने होगी, जो बचपन से ही कमजोर नजर के साथ जीने को मजबूर होगी। खुला आसमान, दूर तक फैला मैदान और धूप में खेलते बच्चे केवल यादें न बन जाएं, इसके लिए अभी से सचेत होना होगा। बच्चों की आंखों की सुरक्षा केवल स्वास्थ्य का सवाल नहीं, बल्कि उनके पूरे भविष्य से जुड़ा हुआ मुद्दा है।

(वरिष्ठ पत्रकार,साहित्यकार,स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

दिल्ली के लापता लोग

पिछले दिनों इस खबर ने दिल्ली और देश के लोगों को चौंकाया कि इस साल जनवरी माह में ही देश की राजधानी में 800 लोग लापता पाए गए, जिसमें महिला, बच्चे व अन्य वयस्क भी शामिल हैं। जैसा कि स्वाभाविक था दिल्ली में लापता लोगों का आंकड़ा सामने आने के बाद आम लोगों में चिंता व्याप्त हो गई। प्रशासनिक स्तर पर भी इस समस्या की ओर अधिकारियों का ध्यान गया। बेलगाम सोशल मीडिया पर तो इन आंकड़ों पर अपनी-अपनी सुविधा और राजनीतिक हितों के मद्देनजर व्याख्या और बयानबाजी सामने आने लगी। पब्लिक फोरम पर कहा जाने लगा कि यह दिल्ली की कानून व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह है। इन आंकड़ों के सामने आने के बाद घर से निकलने के बाद सुरक्षा इंतजामों को लेकर तमाम तरह की सलाहें दी जाने लगीं। कुछ लोग देश के सिस्टम पर सवाल खड़े करने लगे। कुछ लोगों में भय से जुड़ी प्रतिक्रिया भी सामने आई। लेकिन इस बाबत दिल्ली पुलिस द्वारा जारी आंकड़े भी अधिक चिंता बढ़ाने वाले नजर आए। प्रथम दृष्टया यह खबर परेशान करने वाली है, लेकिन पड़ताल में पाया गया कि यह स्थिति पिछले कुछ सालों के आंकड़ों के ही अनुरूप है। अगर हम पिछले कुछ सालों के आंकड़ों पर नजर डालें तो यह स्थिति की पुनरावृत्ति ही है। लेकिन यदि बीते कुछ सालों में लापता होने वाले लोगों की संख्या पर नजर डालें तो कहा जाता है कि इस साल जनवरी में सामने आई लापता लोगों की संख्या ज्यादा नहीं है। इस बाबत दिल्ली पुलिस का कहना है कि जनवरी 26 में कुल 1,777 लोगों के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। प्रथम दृष्टया यह संख्या भले ही बढ़ी लगे, लेकिन जब पिछले दो सालों के आंकड़ों से इसकी तुलना की जाती है तो नई तस्वीर उभरती है। दरअसल, इन आंकड़ों की तह में जाएं तो दिल्ली का विशाल इलाका व सघन जनसंख्या घनत्व भी इसके मूल में है। दरअसल, एक बड़ी आबादी रोजगार व अन्य कार्यों के लिए दिल्ली आती-जाती रहती है। दिल्ली पुलिस के आंकड़ों के अनुसार साल 2024 में करीब 24,893 लोग लापता हुए थे। यानी एक माह में औसतन 2,074 लोग। वहीं साल 2025 में ये संख्या 24,508 लोग लापता हुए। अर्थात ् हर माह 2,042 लोग गुम हुए। इस दृष्टि से जनवरी, 26 का आंकड़ा इस संख्या से कम है। सवाल है कि 2026 के पहले माह के आंकड़ों को लेकर भय क्यों व्याप्त हुआ? दरअसल, पहले पंद्रह दिनों के आंकड़ों के हिसाब से दिल्ली में हर रोज 54 लोग लापता हो रहे थे। इन आंकड़ों के सामने आने के बाद लोगों ने इसके मूल में किसी संकट को देखा। दिल्ली पुलिस के अनुसार ये आंकड़े स्थायी गुमशुदगी के नहीं होते। कुछ लोग अल्पकाल के लिए कहीं चले जाते हैं और देर रात तक घर भी लौट आते हैं। पुलिस का यह भी कहना है कि राष्ट्रीय राजधानी में ऑनलाइन और ऐप आधारित सिस्टम के जरिये लोग जल्दबाजी में अपने परिजनों के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज करा देते हैं। मसलन यदि कोई बच्चा किसी कारणवश स्कूल से लौटने में देर कर दे, कोई व्यक्ति कुछ घंटों तक फोन संपर्क से कट जाए या कोई बुजुर्ग भटकने पर देर से घर पहुंचे तो लोग गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा देते हैं। ये कथित गुमशुदा लोग कुछ समय बाद घर तो लौट आते हैं, लेकिन लोग पुलिस डेटा को अपडेट नहीं करते। फलस्वरूप पुलिस आंकड़ों में उनकी गुमशुदगी बनी रहती है। पुलिस का दावा है कि लापता लोगों को खोजने की दर में लगातार सुधार हो रहा है। साल 2016 में जो 23,409 लोग लापता हुए थे, उनमें से करीब 85 फीसदी नौ साल के भीतर मिल गए। साल 2025 में दर्ज मामलों में 63 फीसदी लोगों को भी एक साल के भीतर तलाश लिया गया।

कलयुगी रिश्ते की डोर कमजोर क्यों?

(लेखक- संजय गोस्वामी)

कलयुगी रिश्ते की डोर कमजोर क्यों है क्योंकि आज के युग में रिश्ता पल पल बदल रहें है क्योंकि मन बहुत चंचल होता है और किसी का स्वभाव बदलता नहीं है अतः यदि रामचरितमानस का अध्ययन करना चाहिए रामचरितमानस के उत्तर कांड के कई दोहों में कहा गया है- वह माया जो पूरे संसार को नचाती है, जिसका चरित्र (काम) कोई नहीं समझ पाया है। यानी, माया पूरे संसार को नचाती है, और कोई भी उसके स्वभाव (कामों) को नहीं समझ पाया है, और माया कई गुण और दोष बनाती है और यह पूरे संसार में फैली हुई है। माया कई गुण और दोष, मोह, काम, अज्ञान आदि बनाती है, जो पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। भगवान राम स्वयं कहते हैं, हे प्रिय! माया ने कई गुण और दोष बनाए हैं। उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। उन्हें अलग-अलग न समझना ही ज्ञान है; उन्हें ऐसा देखना अज्ञान है। ज सुनो, प्रिय, माया कई गुण और दोष बनाती है। गुण यह है कि इन दोनों में से किसी को भी न देखा जाए; उन्हें देखना अज्ञान है। (उत्तर कांड, 41) ज माया द्वारा बनाए गए गुणों और दोषों में काम, मोह, आसक्ति, अज्ञान आदि शामिल हैं। माया कई गुण और दोष बनाती है। मोह, काम, और ऐसी ही अन्य चीजें। (उत्तर कांड, 56.2) भगवान राम कहते हैं, यह पूरा संसार मेरी माया द्वारा बनाया गया है (मेरी माया से उत्पन्न संसार)। (उत्तर कांड, 85.2) भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं- दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया (मेरी यह दिव्य, गुणों से भरी माया पार करना कठिन है, यानी इसे पार करना बहुत मुश्किल है)। यहाँ, एक बात ध्यान देने योग्य है कि भगवान ने माया को मम माया कहा है, जिसका अर्थ है कि माया भगवान की है। हालाँकि, जो लोग इसे स्वतंत्र अस्तित्व वाला मानते हैं, उनके लिए माया पर विजय पाना आसान है। भगवान स्वयं माया पर विजय पाने का तरीका बताते हैं- मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते (जो लोग लगातार मेरी पूजा करते हैं, वे इस माया को पार कर जाते हैं)। इसका मतलब है कि भगवान के प्रति समर्पण ही माया पर विजय पाने का एकमात्र तरीका है। रामचरितमानस में, श्री काकभुशुंडि पक्षियों के राजा गरुड़ से कहते हैं, हरि माया कर अमित प्रभावा। विपुल बार जेहि मोहि नचावा। (हरि की माया में अपार शक्ति है, जिसने हमें कई बार नचाया और भ्रमित किया है)। फिर वे कहते हैं, हे पक्षियों के राजा, गरुड़! वही माया, भगवान श्री रामचंद्र की भौंह के इशारे मात्र से, अपने दल (परिवार) के साथ एक अभिनेत्री की तरह नाचती है। ज सोई प्रभु भ्रूबिलास खगराजा। नाच नटी इव सहित समाजा॥1॥ (उत्तरकाण्ड 71/1) फिर वे कहते हैं, हे पक्षियों के राजा! इसी प्रकार, श्री हरि की पूजा के बिना जीवों का दुख समाप्त नहीं होता। अज्ञान श्री हरि के सेवक को प्रभावित नहीं करता, और भगवान की प्रेरणा से वह ज्ञान प्राप्त करता है। ज ऐसेहि हरि बिनु भजन खगेसा। मिटहिं जीवन्ह के कलेसा॥ हरि सेवकहि न माया अपार है। यह माया भगवान से प्रेरित है। (उत्तरकाण्ड 78.1) भगवान की भक्ति के बिना, यह लाखों प्रयासों से भी दूर नहीं होती (लाखों उपायों से भी दूर नहीं होती)। अंत में, काकभुशुंडि जी अपना अनुभव सुनाते हैं, हे गरुड़ जी, हरि की भक्ति के बिना दुख समाप्त नहीं होता (अब मैं आपको अपना अनुभव बताता हूँ। हरि की भक्ति के बिना दुख दूर नहीं होता)। उपरोक्त चर्चा से दो बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं- 1) यह माया भगवान की है और सभी जीवों को भ्रमित रखती है, और उनमें कई प्रकार के गुण और दोष पैदा करती है। 2) भगवान राम की शरण लिए बिना इस माया पर विजय पाना असंभव है। इसलिए, भगवान की भक्ति बहुत महत्वपूर्ण है।भगवान राम का ध्यान करना मुश्किल जरूर होगा लेकिन यदि मिला तो एक आंनद का अनुभूति होती है अच्छा सोच और डर आपके मन से जाता है इसलिए यदि भगवान राम के चरण को पकड़ लिया तो जीवन सफल हो जायेगा और सही और गलत का फर्क दिखेगा, आप मस्त रहोगे यदि जाने अनजाने में आपके गलती से माता पिता को कोई चोट पहुंचा है तो वो आपके परमात्मा जो परमपिता है उससे क्षमा माँग लें अवश्य ही अच्छा होगा भगवान राम के चरणों में झुकना मतलब मौत को भी मात देना होता है इसके दो उदाहरण हैं जैसे अहिल्या जो श्राप से पत्थर बनी और एक बार जब शरीर नष्ट हुआ तो दोबारा उसी रूप में बापस नहीं आता है लेकिन भगवान राम के चरणों में झुकी अहिल्या पुनः जीवित हो गईं इसी तरह एक और उदाहरण है जब भगवान राम ने बाली को मारा था वो छल जरूर था क्योंकि बाली को यह वरदान मिला था की कोई भी उससे युद्ध करेगा तो उसकी शक्ति आधी हो जाएगी लेकिन बाली को भगवान राम ने साल के वृक्ष के पीछे जो सात साल के वृक्ष थे , जिन्हें एक-एक कर के वाली , एक ही तीर से आर-पार बींध देता था। और जिन सातों साल के वृक्षों को राम ने एक साथ , एक ही बाण से आर-पार बींध दिया था ।उसके बाद उनका वही बाण , पृथ्वी को फोड़ कर वापिस लौटा ,और राम के तरकस में समा गया था। यह काम बाण ने एक ही मुहूर्त में (लगभग 45 मिनिट) कर दिखाया। राम जी का यही पराक्रम देख कर , सुग्रीव को भरोसा हो गया कि राम , वाली को मार सकेंगे ।अतः जब दोनों भाई युद्ध के लिए आए तो भगवान राम ने पहले वाण नहीं चलाया क्योंकि वो जानना चाहते थे सही या गलत कौन है अंततः दूसरे दिन जब सुग्रीव ने बाली को युद्ध के लिए ललकारा तो दोनों में सुग्रीव को माला इसलिए नहीं पहनाया कि दोनों को पहचानते नहीं थे इसलिए पहनाया की तुम विजय होगे और बाली को भगवान राम ने बाण से छुपकर मारा बाली के हृदय में जब तीर लगा हुआ था। जब वह मरने की स्थिति में था तब बाली ने कुछ प्रश्न भगवान से पूछे कहा प्रभु आपने मुझे क्यों मारा। किसी राजा को तपस्या के लिए मेरी छाल किसी काम की नहीं आएगी क्योंकि बंदरों को तो दूषित माना जाता है, और मेरा मांस भी किसी काम का नहीं है। क्योंकि यह खाने के काम नहीं आता। आपने मेरे से सामने आकर युद्ध क्यों नहीं किया। आपने यह कायरता का काम क्यों किया तब भगवान राम ने उसे आशा दिलाया की ऐ ऐसी बाण है जो निकाल दूंगा तो पुनः जीवन मिल जायेगा तब बाली भगवान राम को ईश्वर के रूप में देखा और उसने कहा यदि मैं जीवित रहा तो भोग विलास में लिप्त हो जाऊंगा और अन्त में उसे कष्ट के रूप में भोगना पड़ेगा अतः भगवान राम ने बाली को मोक्ष दिया ऐ जीवन और मरन का अंतर आम आदमी को सही लगता है और विलाप करता है लेकिन सिद्ध या तत्वदर्शी संत को यह मालूम हीं नहीं होता है कि मैं मरा या जिन्दा हो क्योंकि वो तो राम नाम की माया में खोया रहता है अतः आप मत नाचो एक अच्छा इंसान बनो माँ बाप की सेवा करो क्योंकि ऐ तुम्हारा कर्तव्य है।

सर्वव्यापक और न्यायकारी ईश्वर

ईश्वर का दंड एवं उपहार दोनों असाधारण हैं। इसलिए आस्तिक को सदा ध्यान रहेगा कि दंड से बचा जाए और उपहार प्राप्त किया जाए।

यह प्रयोजन छुटपुट पूजा-अर्चना, जप-ध्यान से पूरा नहीं हो सकता। यह भावनाओं और क्रियाओं को उत्कृष्टता के सांचे में ढालने से ही पूरा होता है। न्यायनिष्ठ जज की तरह ईश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। अपना गुणगान करने वाले के साथ यदि वह पक्षपात करने लगे, तब उसकी न्याय व्यवस्था का कोई मूल्य न रहेगा, सृष्टि की सारी व्यवस्था ही गड़बड़ा जाएगी। सबको अनुशासन में रखने वाला परमेर स्वयं नियम व्यवस्था में बंधा है। यदि वह उच्छृंखलता व अव्यवस्था बरतेगा तो फिर उसकी सृष्टि में पूरी तरह अंधेरा फैल जाएगा। फिर कोई उसे न तो न्यायकारी कहेगा और न समदर्शी।

भगवान को हम सर्वव्यापक व न्यायकारी समझकर ईश्वर के दंड से डरें। उसका भक्त वत्सल ही नहीं, रौद्र रूप भी है, जो रुग्ण, मूक, बधिर, अंध, अपंगों की दशा देखकर सहज समझा जा सकता है। केवल बंशी बजाने वाले और रास रचाने वाले ईश्वर का ही ध्यान न रखें। उसका एक त्रिशूलधारी रूप भी है, जो दुरात्माओं का दमन व मर्दन करता है। न्यायनिष्ठ जज की तरह ईश्वर को भी भक्त-अभक्त, प्रशंसक-निंदक का भेद किए बिना व्यक्ति के शुभ-अशुभ कर्मो का दंड या पुरस्कार देना होता है। उपासना का उद्देश्य ईश्वर से अनुचित पक्षपात करना नहीं होना चाहिए। वह हमें सत्प्रवृत्तियों में संलग रहने और सत्पथ से विचलित न होने की दृढ़ता प्रदान करे। यही ईश्वर की कृपा का सर्वश्रेष्ठ चिह्न है।

आस्तिक या नास्तिक की पहचान तिलक, जनेऊ, कंठी, माला आदि के आधार पर नहीं, वरन भावनात्मक व क्रियात्मक गतिविधियों को देखकर ही होती है। आस्तिक की मान्यता प्राणिमात्र में ईश्वर की उपस्थिति देखती है। इसलिए उसे हर प्राणी के साथ उदारता, आत्मीयता व सेवा सहायता भरा व्यवहार करना पड़ता है। भक्ति का अर्थ है- प्रेम। जो प्रेमी है, वह अपने क्रियतम को सर्वव्यापक देखेगा और सभी से सौम्यतापूर्ण व्यवहार कर भक्ति भावना का परिचय देगा। ईश्वर दर्शन का यही रूप है। हर चर-अचर में छिपे परमात्मा को जो अपनी ज्ञान दृष्टि से देख सका और तदनुरूप कर्त्तव्य निर्धारण कर सका, मानना चाहिए, उसे ईश्वर दर्शन का लाभ मिल गया। अपने में परमेर और परमेर में अपने को देखने की दिव्य दृष्टि जिसे मिल गई, समझो उसने पूर्णता का जीवन लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

विचार मंथन

वैश्विक कूटनीति में बदलता शक्ति संतुलन

(लेखक - डॉ हिदायत अहमद खान

मानव समाज ने विकास के नाम पर जिस क्रूरता से प्रकृति-प्रदत्त हरे-भरे जंगलों और पर्वत श्रंखलाओं को नष्ट किया है उसके अब दूष्परिणाम सामने आने लगे हैं। मानव ने जंगलों को खत्म कर कंक्रीट के जंगल खड़े किए, बहुतायत में पहाड़ों को समतल किया गया और भूमिगत जल के साथ ही तमाम तरह की खनिज संपदा निकालकर पृथ्वी को अंदर से भी खोखला कर दिया। ये वो प्राकृतिक चीजें हैं जो पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखती हैं, जब यही असंतुलित हो गईं तो फिर प्रकृति खुद अपना संतुलन तो बनाएगी ही। इसलिए पिछले कुछ वर्षों में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लगातार भूकंप के झटकों, तीव्र तूफानों, भीषण बारिश, बाढ़ और सुप्त ज्वालामुखियों के सक्रिय होने की खबरें सामने आ रही हैं। इन घटनाओं को केवल संयोग नहीं कह सकते हैं। दरअसल ये पृथ्वी की भूगर्भीय गतिविधियों और तेजी से बिगड़ते प्राकृतिक संतुलन की ओर इशारा कर रही हैं। प्रकृति मानो यह संकेत दे रही है कि वह अपने भीतर जमा दबाव को बाहर निकालने की प्रक्रिया में है, जिसे वैज्ञानिक भाषा में टेक्टोनिक प्लेटों की हलचल और जलवायु परिवर्तन से जोड़कर देखा जाता है। भूगाल की भाषा में कहें तो भूकंप पृथ्वी की आंतरिक प्लेटों के आपसी टकराव, खिसकने या टूटने का परिणाम होते हैं। प्रशांत महासागर का 'रिंग ऑफ फायर' क्षेत्र इसका प्रमुख उदाहरण है, जहां दुनिया के लगभग 90 प्रतिशत भूकंप आते हैं और कई ज्वालामुखी सक्रिय रहते हैं। यह क्षेत्र लंबे समय से भूगर्भीय रूप से संवेदनशील रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में इसकी गतिविधियों में तेजी आई है। इसके साथ ही, यूरोप, एशिया और अमेरिका जैसे क्षेत्रों में भी असामान्य भूकंपीय गतिविधियां देखी जा रही हैं, जो पृथ्वी के भीतर बढ़ते असंतुलन का संकेत मानी जा सकती हैं।

दूसरी ओर, मौसम संबंधी आपदाएं भी इसी कड़ी का हिस्सा हैं। हाल ही में यूरोप के इबेरियन प्रायद्वीप पर स्टॉर्म लियोनार्डो ने भारी तबाही मचाई। स्पेन और पुर्तगाल में मूसलाधार बारिश और तेज हवाओं के कारण नदियां उफान पर आ गईं, बाढ़ जैसे हालात बने और हजारों लोगों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। अकेले स्पेन के अंडालूसिया क्षेत्र में 11 हजार से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया, जबकि पुर्तगाल के कई शहरों में आपातकाल लागू करना पड़ा। स्थिति की गंभीरता इस बात से समझी जा सकती है कि लियोनार्डो के गुजरने के बाद भी खतरा टला नहीं है। मौसम विभाग चेतावनी दे चुका है कि मार्ता तूफान तट से टकरा सकता है, जिसकी रफ्तार 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती है। लगातार बारिश के कारण जमीन पहले ही पानी से संतृप्त हो चुकी है और अब उसमें और पानी समाने की क्षमता नहीं बची है। इसका सीधा असर नदियों के जलस्तर, बांधों और जलाशयों पर पड़ रहा है, जिससे बड़े पैमाने पर बाढ़ और भूस्खलन का खतरा बढ़ने की आशंका भी जताई जा रही है। अंडालूसिया के कोर्डोबा प्रांत में ग्वाडलक्विविर नदी का जलस्तर खतरनाक स्तर तक पहुंच गया, जिसके चलते रिहायशी इलाकों को खाली कराना पड़ा और ऐतिहासिक रोमन ब्रिज पर आवाजाही रोक दी गई। ग्रहजालेमा पर्वतीय क्षेत्र में तो हालात और भी चिंताजनक हैं, जहां चट्टानें अत्याधिक पानी सोखने पर घुलने लग जाती हैं। इससे जमीन धंसने का खतरा पैदा हो जाता है, जिससे मकानों और सड़कों की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन जाता है।

पुर्तगाल में भी हालात अलग नहीं हैं। साडो नदी के किनारे स्थित अल्कासेर शहर का बड़ा हिस्सा कई दिनों से पानी में डूबा हुआ है। बताया जा रहा, कि लोगों के पास पहनने के कपड़ों के अलावा कुछ नहीं बचा और हजारों नागरिकों को तत्काल सहायता की जरूरत है। टैगस नदी सहित छह प्रमुख नदियों को रेड अलर्ट पर रखा गया है। सरकार ने फरवरी मध्य तक 69 नगरपालिकाओं में आपदा स्थिति बढ़ाने का फैसला किया है, जो इस संकट की व्यापकता को दर्शाता है। ऐसे में साधारणतः यही कहा जाता है कि इन सभी घटनाओं के पीछे जलवायु परिवर्तन की बड़ी भूमिका है। बढ़ता वैश्विक तापमान, अनियंत्रित शहरीकरण, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मौसम चक्र को असंतुलित कर रहे हैं। लगातार आने वाले तूफानों की यह 'स्टॉर्म ट्रेन' बताती है कि अब चरम मौसमी घटनाएं अपवाद नहीं, बल्कि नई सामान्य स्थिति बनती जा रही हैं। भूकंप के झटके, तीव्र तूफान और ज्वालामुखीय गतिविधियां यह संकेत देती हैं कि प्रकृति अपने तरीके से संतुलन बनाने की कोशिश कर रही है। अब सवाल यह है कि क्या मानव समाज इन चेतावनियों को गंभीरता से ले रहा है? केवल आपदा के बाद राहत और बचाव पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं होगा। जरूरत है मजबूत बुनियादी ढांचे, बेहतर शहरी नियोजन, वैज्ञानिक चेतावनी प्रणालियों और दीर्घकालिक पर्यावरण संरक्षण नीतियों की।

यहां यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रकृति के साथ टकराव नहीं, बल्कि सामंजस्य ही मानव सभ्यता की सुरक्षा का एकमात्र रास्ता है। यदि समय रहते संतुलन नहीं साधा गया, तो आने वाले वर्षों में ऐसी आपदाएं और अधिक भयावह रूप ले सकती हैं। प्रकृति के संकेत साफ हैं, अब भी चेत जाने का वक्त है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अमेरिकी बाजार मजबूत बढ़त के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी बाजार शुक्रवार को मजबूती के साथ बंद हुए। डाओ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 1,206.95 अंक बढ़कर 50,115.67 पर बंद हुआ। इस साल अब तक यह 4.3 फीसदी ऊपर है। प्रमुख योगदानकर्ता कैटरपिलर का शेयर 7.1 फीसदी उछलकर 726.20 डॉलर पर पहुंचा। गोल्डमैन सैक्स और एनवीडिया ने भी इंडेक्स को मजबूती दी। एसएंडपी 500 में 2026 में 1.3 फीसदी की बढ़त रही, जबकि नैस्डैक 0.9 फीसदी गिरा। टेक सेक्टर में एआई को लेकर चिंताओं के कारण दबाव रहा। निवेशक उम्मीद कर रहे हैं कि फेडरल रिज़र्व महंगाई को काबू में रखते हुए अर्थव्यवस्था को नुकसान नहीं पहुंचाएगा और 2026 में ब्याज दरें घटाना जारी रखेगा।

सेंसेक्स दिसंबर 2026 तक 1,07,000 तक जा सकता है: रिपोर्ट

मुंबई । एक ग्लोबल ब्रोकरेज फर्म ने भारतीय शेयर बाजार को लेकर सकारात्मक भविष्यवाणी की है। रिपोर्ट के मुताबिक अगर बाजार में तेजी का माहौल बना रहता है तो दिसंबर 2026 तक सेंसेक्स 1,07,000 के स्तर तक पहुंच सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आरबीआई की ग्रोथ-फ्रेंडली नीतियां, ब्याज दरों में कटौती, बैंकिंग सिस्टम में बढ़ती लिक्विडिटी और सरकार का कैपेक्स पर जोर बाजार को मजबूत करेगा। बजट में ग्रोथ को बढ़ावा देने वाले कदम और टैक्स सुधार भी निवेशकों के लिए सकारात्मक संकेत हैं। आने वाले महीनों में कंपनियों की अर्निंग्स ग्रोथ में सुधार की संभावना है, जिससे विदेशी निवेशकों की वापसी हो सकती है। कमजोर पिछला प्रदर्शन, आकर्षक वैल्यूएशन और कमजोर रुपया निवेशकों को आकर्षित कर सकते हैं। भारत-अमेरिका ट्रेड डील और चीन से बेहतर संबंध भी बाजार के लिए पॉजिटिव फैक्टर माने जा रहे हैं। उनका निष्कर्ष है कि मजबूत नीतियां, बेहतर अर्निंग्स और वैश्विक सहयोग से भारतीय शेयर बाजार में सुधार की संभावनाएं बढ़ रही हैं।

भारत में कॉपर खपत अगले दो सालों में 10-12 फीसदी बढ़ने का अनुमान: इक्रा

नई दिल्ली । आईसीआरए ने अनुमान लगाया है कि भारत में अगले दो वित्तीय वर्षों में कॉपर की घरेलू खपत सालाना 10-12 फीसदी बढ़ सकती है। वित्त वर्ष 26 के पहले सात महीनों में 14-15 फीसदी की तेज़ वृद्धि दर्ज होने के बाद यह दर थोड़ी धीमी रहेगी, क्योंकि ऊंची कीमतों से शॉर्ट-टर्म मांग पर दबाव हो सकता है। तेज़ शहरीकरण, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास और ग्रीन एनर्जी ट्रांज़िशन कॉपर की मांग को मजबूत कर रहे हैं। रिन्यूएबल एनर्जी, पावर ग्रिड, डेटा सेंटर और इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे सेक्टर मीडियम-टर्म में प्रमुख मांग चालक बनेंगे। फिलहाल घरेलू स्तर पर रिफाइंड कॉपर की कमी है, लेकिन नई क्षमता और बेहतर सप्लाई से स्थिति धीरे-धीरे सुधरेगी। मजबूत कीमतों से अपस्ट्रीम कंपनियों को फायदा मिलेगा, जबकि डाउनस्ट्रीम स्मेल्टिंग और रिफाइनिंग कंपनियों के मार्जिन पर दबाव बना रहेगा।` वित्त वर्ष 26 में कॉपर की कीमतों में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है और जनवरी 2026 तक यह लगभग 13,000 डॉलर प्रति टन तक पहुंच गई, माइन सप्लाई में रुकावट, ओर ग्रेड गिरावट और अमेरिकी टैरिफ अनिश्चितताओं के कारण।

आरबीआई की छोटी एनबीएफसी को पंजीकरण और शाखा अनुमति में छूट देने की योजना

नई दिल्ली ।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने घोषणा की है कि जिन बीएफसी की संपत्ति 1,000 करोड़ रुपये से कम, जो जनता से पूंजी नहीं जुटाती और जिनका ग्राहकों से सीधा संपर्क नहीं है, उन्हें अब आरबीआई में पंजीकरण कराने से छूट दी जा सकती है। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि इन कंपनियों पर लागू नियमों की समीक्षा की गई है, और उनकी विशेष संरचना को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय प्रस्तावित किया गया है। इसका उद्देश्य इन छोटी एनबीएफसी के लिए अनुपालन बोझ कम करना है। केंद्रीय बैंक ने यह भी प्रस्ताव रखा है कि इन एनबीएफसी को 1,000 से अधिक शाखाएं खोलने से पहले अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होगी। इसका मतलब है कि ये कंपनियां अपनी विस्तार योजनाओं को आरबीआई की पूर्व मंजूरी के बिना लागू कर सकती हैं, जब तक कोई विशेष प्रतिबंध न हो। आरबीआई ने स्पष्ट किया कि यह कदम वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और जोखिम प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए उठाया गया है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ऋण का प्रवाह और नकदी उपलब्धता अर्थव्यवस्था में बनाए रखी जाए। इस मसौदे पर हितधारकों की राय 27 फरवरी, 2026 तक आमंत्रित की गई है। इसके माध्यम से आरबीआई नियमों को अंतिम रूप

देने से पहले सभी सुझावों को ध्यान में रखेगा। छोटे एनबीएफसी के लिए यह निर्णय सुविधाजनक संचालन और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देगा, साथ ही उन्हें कम अनुपालन बोझ के साथ कार्य करने की स्वतंत्रता भी देगा।

आरबीआई की नीति स्थिर, तरलता पर्याप्त; आर्थिक वृद्धि के लिए सहायक कदम

- डॉलर-रुपया विनिमय दर 90-91 रुपये प्रति डॉलर के दायरे में रहने का अनुमान

मुंबई । रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने हाल ही में अपनी नीतिगत समीक्षा में ब्याज दरों को पहले के स्तर पर बनाए रखने और नीति को तटस्थ रखने का निर्णय लिया। गवर्नर ने स्पष्ट किया कि कर्ज का प्रवाह अर्थव्यवस्था की उत्पादक गतिविधियों के अनुसार होगा, जिससे आर्थिक विकास को सहारा मिलेगा। आरबीआई ने कहा कि बैंकिंग प्रणाली में तरलता पर्याप्त स्तर पर रहेगी। चालू वित्त वर्ष में बैंकिंग प्रणाली में लगभग 13 लाख करोड़ रुपये की नकदी डाली गई है। बैंकों का अनुमान है कि अगले वित्त वर्ष में 4-5 लाख करोड़ रुपये अतिरिक्त तरलता उपलब्ध कराई जा सकती है। यह कदम बॉन्ड और कॉल मनी मार्केट सहित सभी वित्तीय बाजारों में नीतिगत प्रभावों के प्रसार में मदद करेगा। अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ हाल में घोषित व्यापार समझौतों से देश की आर्थिक वृद्धि के अनुमान 6.9 फीसदी से बढ़कर 7.1-7.2 फीसदी तक पहुंच सकते हैं। बैंकिंग विशेषज्ञों के अनुसार यह वृद्धि निवेश और निर्यात गतिविधियों में सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। डॉलर-रुपया विनिमय दर 90-91 रुपये प्रति डॉलर के दायरे में रहने का अनुमान है। वहीं 10 वर्ष की मियाद वाले सरकारी बांड पर यील्ड 6.65-6.80 फीसदी के बीच रहने की उम्मीद है। चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में मुद्रास्फीति 3.2 फीसदी रहने का अनुमान है, जबकि पूरे वर्ष के लिए 2.1 फीसदी का अनुमान रखा गया है। अगले वित्त वर्ष में शुद्ध सरकारी उधारी हल्की बढ़कर 11.7 लाख करोड़ रुपये रहने की संभावना है।

अमेरिका-भारत व्यापार समझौते के बाद सेंसेक्स और निफ्टी में उतार-चढ़ाव

- भारतीय शेयर बाजार ने ट्रेड डील और बजट के असर के चलते उतार-चढ़ाव भरा प्रदर्शन दर्ज किया

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार ने इस सप्ताह उतार-चढ़ाव भरा प्रदर्शन देखा, जिसमें व्यापार समझौते और बजट के प्रभाव ने निवेशकों की भावना पर बड़ा असर डाला। सप्ताह की शुरुआत सोमवार को लाल निशान पर हुई, लेकिन ब्लू-चिप कंपनियों में मजबूती और मूल्य-खरीदारी ने सेंसेक्स और निफ्टी को सकारात्मक रुख अपनाने के लिए प्रेरित किया। बीएसई सेंसेक्स 302 अंक की बढ़त के साथ 81,024.94 पर पहुंचा, जबकि एनएसई निफ्टी 59.25 अंक बढ़कर 24,884.70 पर बंद हुआ। रुपया भी अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 37 पैसे मजबूत होकर 91.56 पर आ गया। मंगलवार को भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते की घोषणा ने बाजार में उत्साह भर दिया। सेंसेक्स ने दिन में 4,205.27 अंक की छलांग लगाते हुए 85,871.73 के उच्चतम स्तर को छुआ और अंततः 2,072.67 अंक बढ़कर 83,739.13 पर बंद हुआ। निफ्टी भी 682 अंकों की तेजी के साथ 25,770.40 पर बंद हुआ। यह सप्ताह का सबसे जोरदार रुख रहा, जिससे निवेशकों की विश्वास में स्पष्ट बढ़त देखने को मिली। सप्ताह के मध्य बुधवार को बाजार मामूली तेजी के साथ बंद हुआ। सेंसेक्स 78.56 अंक बढ़कर 83,817.69 पर और निफ्टी 48.45 अंक बढ़कर 25,776 पर बंद हुआ। हालांकि गुरुवार को बाजार फिर लाल निशान में आ गया, सेंसेक्स 503.76 अंक गिरकर 83,313.93 और निफ्टी 133.20 अंक गिरकर

25,642.80 पर बंद हुए। यह गिरावट कुछ हद तक अमेरिकी बाजारों में कमजोरी और तकनीकी सुधार की वजह से आई।

सप्ताह के अंत में शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में कमजोरी के बावजूद बाजार ने रिकवरी की। सेंसेक्स 266.47 अंक की बढ़त के साथ 83,580.40 पर और निफ्टी 50.90 अंक की तेजी के साथ 25,693.70 पर बंद हुआ। कुल मिलाकर इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार ने अमेरिका-भारत व्यापार समझौते और बजट के असर के चलते उतार-चढ़ाव भरा प्रदर्शन दर्ज किया।

निवेशकों की निगाहें अब अगले सप्ताह के आर्थिक संकेतकों और वैश्विक बाजार की दिशा पर टिकी हैं, जिससे बाजार की स्थिरता और रुझान तय होने की संभावना है।

गेहूं, चावल, डेयरी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को पूर्ण संरक्षण

नई दिल्ली।

भारत और अमेरिका ने शनिवार को अंतरिम व्यापार समझौते के तहत अमेरिका भारतीय वस्तुओं पर शुल्क को पहले के 50 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत करेगा। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि यह समझौता किसानों के हितों की रक्षा और ग्रामीण आजीविका बनाए रखने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दर्शाता है। इस समझौते में मक्का, गेहूं, चावल, सोया, पॉल्ट्री, दूध, पनीर, एथेनॉल (ईंधन), तंबाकू, कुछ सब्जियां और मांस जैसे संवेदनशील कृषि और डेयरी उत्पादों को पूरी तरह संरक्षित किया गया है। इन उत्पादों का संबंध छोटे और सीमांत किसानों की आजीविका से जुड़ा होने के कारण इन्हें संवेदनशील श्रेणी में रखा गया है। कृषि और पशुपालन भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, जो लगभग 70 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। विकसित देशों की तुलना में, भारत में कृषि बड़े पैमाने पर मशीनरी पर निर्भर नहीं है, इसलिए आयात और सीमा शुल्क के माध्यम से किसानों को

विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण दिया जाता है। भारत का अमेरिका को कृषि निर्यात 2024 में 1.6 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जिसमें बादाम, पिस्ता, सेब और एथेनॉल प्रमुख हैं। भारत अगले चार वर्षों में कृषि, समुद्री उत्पाद और खाद्य एवं पेय पदार्थों का संयुक्त निर्यात 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक बढ़ाना चाहता है। अमेरिका कई खाद्य और कृषि उत्पादों पर शुल्क घटाएगा या समाप्त करेगा, जिससे दोनों देशों के लिए व्यापार लाभ बढ़ेगा।

आईटी शेयरों में एआई के असर से सबसे बड़ी गिरावट

नई दिल्ली। भारतीय आईटी शेयर इस सप्ताह सबसे खराब प्रदर्शन कर रहे हैं। निफ्टी आईटी सूचकांक 1.5 फीसदी गिरकर हफ्ते भर में 6.4 फीसदी की गिरावट दर्ज कर चुका है। इससे संबंधित कंपनियों का बाजार पूंजीकरण लगभग 6.4 लाख करोड़ रुपये घट गया। इन्फोसिस में सबसे ज्यादा 8.2 फीसदी और टेक महिंद्रा में 7.1 फीसदी का नुकसान हुआ। एंथ्रोपिक ने क्लाउड ओपस 4.6 मॉडल और नए एआई प्लग-इन्स पेश किए हैं, जो वित्त, कानूनी, मार्केटिंग और डेटा एनालिसिस जैसी सेवाओं को स्वचालित कर सकते हैं। इससे पारंपरिक आईटी सेवा मॉडल पर असर पड़ने की आशंका है, जिससे निवेशकों में चिंता बढ़ी।

सोने में 2 लाख निवेश से 2050 तक बन सकती है करोड़ों की संपत्ति!

मुंबई । सोने की कीमत में गिरावट ने निवेशकों के लिए नए मौके खोले हैं। वर्तमान में 24 कैरेट सोने की कीमत लगभग 1,56,630 रुपए प्रति 10 ग्राम है। इस आधार पर 2 लाख रुपए में निवेश करने पर आपको लगभग 12.77 ग्राम सोना मिलेगा। दिखने में यह मात्रा छोटी लग सकती है, लेकिन दीर्घकालिक निवेश में इसकी असली ताकत समय के साथ बढ़ने वाले रिटर्न में है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार सोना ऐतिहासिक रूप से 8-11 फीसदी सालाना रिटर्न देता रहा है। यदि आप 24 साल के लिए निवेश करते हैं, तो 2 लाख रुपए की रकम भविष्य में इस तरह बढ़ सकती है- अनुमानित सालाना रिटर्न 7 फीसदी (धीमी बढ़त), 2050 में संभावित कीमत 10.14 लाख रुपए, अनुमानित सालाना रिटर्न 9 फीसदी (औसत बढ़त) 2050 में संभावित कीमत 15.82 लाख रुपए और अनुमानित सालाना रिटर्न11 फीसदी (शानदार बढ़त) 2050 में संभावित कीमत 24.44 लाख रुपए। सोना महंगाई से सुरक्षा प्रदान करता है और शेयरों या क्रिप्टो की तुलना में स्थिर निवेश माना जाता है। नियमित निवेश और लंबे समय तक पकड़ इसे और भी लाभकारी बना सकते हैं।

ट्रंप की व्यापार नीति के तहत भारत का बड़ा बाजार अमेरिकी उत्पादों के लिए खुलेगा: ग्रीर

- ट्रंप प्रशासन की पहल, टैरिफ कटौती से अमेरिकी किसानों और कंपनियों को लाभ

वाशिंगटन ।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की व्यापार नीति के तहत भारत का विशाल बाजार अब अमेरिकी उत्पादों के लिए और अधिक खुलने जा रहा है। अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) जैमीसन ग्रीर ने कहा है कि भारत अमेरिकी औद्योगिक और कृषि उत्पादों पर लगने वाले शुल्क (टैरिफ) को कम करने पर सहमत हुआ है, जिससे अमेरिकी कंपनियों और किसानों को सीधा फायदा मिलेगा। यह बयान शुक्रवार को उस समय आया, जब व्हाइट हाउस ने अमेरिका और भारत के बीच एक अंतरिम व्यापार समझौते (इंटरिम ट्रेड एग्रीमेंट) के ढांचे की घोषणा की। इस समझौते का उद्देश्य दोनों देशों के बीच निष्पक्ष, संतुलित और आपसी लाभ पर आधारित व्यापार को बढ़ावा देना है। ग्रीर ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप की पहल से दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल भारत अब अमेरिकी कामगारों और उत्पादकों के लिए पहले से ज्यादा खुल रहा है। इस समझौते के तहत भारत सभी अमेरिकी औद्योगिक उत्पादों पर टैरिफ खत्म करेगा या उनमें बड़ी कटौती करेगा। इसके अलावा, अमेरिकी खाद्य पदार्थों और कृषि उत्पादों की एक विस्तृत श्रेणी पर भी शुल्क कम किया जाएगा। वहीं दूसरी ओर, अमेरिका अपने बढ़ते व्यापार घाटे को कम करने के लिए भारतीय सामानों पर 18 प्रतिशत की आपसी टैरिफ दर लगाएगा।

इस टैरिफ के दायरे में टेक्सटाइल और कपड़े, चमड़ा व जूते, प्लास्टिक और रबर उत्पाद, ऑर्गेनिक केमिकल, होम डेकोर, हस्तशिल्प और कुछ मशीनरी शामिल होंगी। हालांकि, अगर यह अंतरिम समझौता पूरी तरह लागू होता है तो अमेरिका कुछ भारतीय उत्पादों जैसे सस्ती दवाएं, रत्न-हीरे और विमान के पुर्जों पर से शुल्क हटा सकता है। ग्रीर ने भारत के वाणिज्य मंत्रालय और विशेष रूप से वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की भूमिका की सराहना की। दोनों देशों ने स्पष्ट किया है कि यह अंतरिम समझौता एक बड़े और व्यापक भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते की दिशा में पहला कदम है, जिस पर बातचीत आगे भी जारी रहेगी।

चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट, 75 फीसदी लुढ़क सकते हैं भाव

- वैश्विक संकेतों का असर, गिरावट के बाद घरेलू बाजार में दिखी तेज खरीदारी

नई दिल्ली ।

चांदी की कीमतों में शुक्रवार को एक बार फिर भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला। अंतरराष्ट्रीय बाजार में बड़ी गिरावट के बाद कॉमेक्स पर सिल्वर का भाव गिरकर 63.900 डॉलर प्रति औंस तक आ गया। इसका सीधा असर घरेलू बाजार पर भी देखने को मिला, जहां एमसीएक्स सिल्वर का रेट इंट्रा-डे में फिसलकर 2.29 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के निचले स्तर तक पहुंच गया। हालांकि, निचले स्तरों पर निवेशकों की तरफ से जबरदस्त खरीदारी देखने को मिली।

इसी का नतीजा रहा कि चांदी की कीमतों में रिकवरी आई और भाव दोबारा बढ़कर 2.48 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के आसपास पहुंच गया। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि मौजूदा गिरावट के बावजूद आगे और दबाव बन सकता है। बाजार के जानकारों के अनुसार चांदी की कीमतों में गिरावट के पीछे दो बड़े कारण हैं। पहला, अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव अब कम होता नजर आ रहा है। दोनों देश न्यूक्लियर बातचीत के लिए तैयार हो गए हैं, जिससे सुरक्षित निवेश माने जाने वाले गोल्ड और सिल्वर की मांग घटी है। दूसरा कारण डॉलर का अन्य प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले मजबूत होना है। इसके अलावा, ऊंचे स्तरों पर निवेशकों द्वारा की गई प्रॉफिट बुकिंग ने भी कीमतों पर दबाव डाला। एक बाजार विशेषज्ञ का कहना है कि चांदी की कीमतें अपने उच्चतम स्तर से 75 से 80 प्रतिशत तक गिर सकती हैं। उनका अनुमान है कि आने वाले दो सालों में सिल्वर का भाव घटकर 25 से 30 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर आ सकता है। विशेषज्ञों की मानें तो चांदी में फिलहाल उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। ऐसे में निवेशकों को सतर्क रहने और किसी भी फैसले से पहले बाजार के संकेतों पर करीबी नजर रखने की सलाह दी जा रही है।

भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम व्यापार समझौते का फ्रेमवर्क तय- निर्मला सीतारमण

जेनेरिक दवाओं, रत्न-हीरों और एयरक्राफ्ट पार्ट्स को मिलेगा फायदा, 'मेक इन इंडिया' को नई रफ्तार

नई दिल्ली । भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक रिश्तों को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम उठाया गया है। दोनों देशों ने एक अंतरिम ट्रेड एग्रीमेंट के लिए फ्रेमवर्क को अंतिम रूप दे दिया है। इस समझौते के तहत भारतीय उत्पादों पर अमेरिका द्वारा लगाए जाने वाले टैरिफ में औसतन 18 प्रतिशत तक कमी आने की संभावना है, हालांकि यह पूरी तरह अंतरिम समझौते के सफल क्रियान्वयन पर निर्भर करेगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी देते हुए बताया कि भारत और अमेरिका ने आपसी और लाभकारी व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए एक संयुक्त बयान जारी किया है। उन्होंने कहा कि दोनों देश भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर बातचीत के लिए प्रतिबद्ध हैं। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इस फ्रेमवर्क को भारत-अमेरिका ट्रेड पार्टनरशिप के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि इससे भारतीय निर्यातकों को अधिक बाजार पहुंच मिलेगी और 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने वाले नए रास्ते खुलेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे दोनों देशों के बीच बढ़ते विश्वास और साझेदारी का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि यह समझौता किसानों, मछुआरों और उद्यमियों के लिए नए अवसर पैदा करेगा और बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन में मदद करेगा। साथ ही निवेश और टेक्नोलॉजी साझेदारी को भी मजबूती मिलेगी। वो णिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि यह फ्रेमवर्क भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक सहयोग को और गहरा करेगा तथा सस्टेनेबल ग्रोथ के प्रति साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस फ्रेमवर्क के तहत जेनेरिक दवाएं, रत्न और हीरे, एयरक्राफ्ट व एयरक्राफ्ट पार्ट्स जैसे क्षेत्रों में टैरिफ हटाने या घटाने का रास्ता खुलेगा। इसके अलावा, भारत को ऑटोमोटिव पार्ट्स के लिए तरजीही टैरिफ कोटा मिलने की भी संभावना है, जिससे भारतीय उद्योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलेगी।

भारत ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रूस से तेल आयात बंद करने की प्रतिबद्धता जताई अमेरिका

न्यूयॉर्क ।

अमेरिका ने घोषणा की है कि भारत ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रूस से तेल आयात बंद करने की प्रतिबद्धता जताई है। इसके परिणामस्वरूप 7 फरवरी 2026 से भारतीय वस्तुओं पर लगाया गया अतिरिक्त 25 प्रतिशत मूल्य-आधारित शुल्क हटा दिया जाएगा। अगस्त 2025 में भारत के रूस से तेल खरीदने पर यह अतिरिक्त शुल्क लगाया गया था, जो पहले से मौजूद 25 प्रतिशत शुल्क के साथ मिलकर कुल 50 प्रतिशत हो गया था। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेश के अनुसार भारत ने अगले 10 वर्षों के लिए अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई है। इसके अलावा, भारत अमेरिका से ऊर्जा उत्पाद खरीदने और रणनीतिक सहयोग बढ़ाने के लिए भी तैयार है। राष्ट्रपति कार्यालय ने इसे दोनों देशों के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति और आर्थिक तालमेल के लिए महत्वपूर्ण कदम बताया। अमेरिका ने चेतावनी दी है कि यदि भारत भविष्य में रूस से तेल आयात फिर से शुरू करता है, तो अमेरिकी राष्ट्रपति की टीम अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क या अन्य उपायों की सिफारिश कर सकती है। वाणिज्य और विदेश मंत्री इस बात की निगरानी करेंगे कि भारत की प्रतिबद्धता का पालन हो रहा है या नहीं। ट्रंप ने कहा कि रूस की नीतियां अमेरिका के लिए असामान्य और असाधारण खतरा हैं। आदेश में विदेश मंत्री मार्को रुबियो और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को आईईईपीए कानून के तहत राष्ट्रपति को मिलने वाले अधिकारों का प्रयोग करने और आदेश के क्रियान्वयन के निर्देश दिए गए हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अंडर-19 वर्ल्ड कप विजेता भारतीय टीम को बीसीसीआई का तोहफ़ा, 7.5 करोड़ रुपये का कैश पुरस्कार घोषित

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने आईसीसी अंडर-19 पुरुष क्रिकेट वर्ल्ड कप 2026 जीतने वाली भारतीय टीम के लिए 7.5 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि का ऐलान किया है। यह इनाम न सिर्फ विजेता खिलाड़ियों बल्कि कोचिंग स्टाफ, तकनीकी टीम और चयन समिति को भी दिया जाएगा। बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने शनिवार को इसकी आधिकारिक पुष्टि की और बताया कि पुरस्कार राशि के विभाजन पर जल्द ही अंतिम निर्णय लिया जाएगा। सैकिया के अनुसार जिम्बाब्वे और नामीबिया में आयोजित इस टूर्नामेंट में भारत ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए रिकॉर्ड छठी बार खिताब पर कब्जा जमाया। उन्होंने बताया कि 7.5 करोड़ रुपये की राशि टीम के सभी सदस्यों के बीच बांटी जाएगी, हालांकि वितरण का सटीक फॉर्मेट अभी तय होना बाकी है।

हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने इंग्लैंड को 100 रन से मात देकर अपने दबदबे को और मजबूत किया। फाइनल मैच में 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने 80 गेंदों पर 175 रन की विस्फोटक शतकीय पारी खेलकर भारत की जीत की नींव रखी। उनकी इस पारी ने इंग्लैंड के गेंदबाजों को शुरुआत से ही दबाव में ला दिया। कप्तान आयुष म्हात्रे के 53 रन और विकेटकीपर अभिग्यान कुंडू के 40 रन ने टीम के स्कोर को 411/9 तक पहुंचाया। जवाब में इंग्लैंड की टीम 311 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड के कैलिब फाल्कनर के 115 रन भी उनकी टीम को बचा नहीं पाए। इस खिताबी जीत के साथ भारत ने एक अनोखा रिकॉर्ड भी अपने नाम किया है। फिलहाल भारत के पास अंडर-19 पुरुष और अंडर-19 महिला वर्ल्ड कप दोनों के खिताब मौजूद हैं, जो देश के मजबूत ग्रासरूट ढांचे और प्रतिभा विकास प्रणाली को दर्शाता है। बीसीसीआई सचिव ने टीम की जीत की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय क्रिकेट की प्रगति मजबूत घरेलू संरचना, गुणवत्तापूर्ण कोचिंग और प्रतिभा पहचान के निरंतर प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने यह भी बताया कि सीनियर पुरुष और महिला क्रिकेटरों के केंद्रीय अनुबंधों को लेकर बोर्ड जल्द ही अपडेट जारी करेगा।

डेविस कप क्वालिफायर: सुमित नागल को शुरुआती सिंगल्स में हार, भारत नीदरलैंड से 0-1 से पीछे

बेंगलुरु (एजेंसी)। डेविस कप क्वालिफायर मुकाबले में भारत को शुरुआती झटका लगा है। देश के शीर्ष एकल खिलाड़ी सुमित नागल को पहले सिंगल्स मैच में नीदरलैंड के गाइ डे ओउडेन के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। तीन सेट तक चले इस मुकाबले में नागल 0-6, 6-4, 3-6 से पराजित हुए, जिसके बाद भारत सीरीज में 0-1 से पीछे हो गया है।

मैच की शुरुआत नागल के लिए बेहद कठिन रही। पहले सेट में गाइ डे ओउडेन ने आक्रामक खेल दिखाते हुए नागल को कोई मौका नहीं दिया और सेट 6-0 से अपने नाम किया। हालांकि, दूसरे सेट में नागल ने शानदार वापसी की, अपनी लय हासिल की और निर्णायक ब्रेक के साथ 6-4 से सेट जीतकर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया।

तीसरे और निर्णायक सेट में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला, लेकिन अहम मौकों पर गाइ डे ओउडेन ने बेहतर खेल दिखाया और 6-3 से सेट जीतकर मैच अपने नाम कर लिया।

इस हार के साथ ही बेंगलुरु में खेले जा रहे डेविस कप क्वालिफायर टाई में भारत पर दबाव बढ़ गया है। अब भारतीय टीम को अगले मुकाबलों में वापसी कर सीरीज में बराबरी हासिल करने की जरूरत होगी, ताकि क्वालिफिकेशन की उम्मीदें बनी रहें।

आगामी मैचों में भारतीय खिलाड़ियों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है, जिससे घरेलू दर्शकों के सामने टीम वापसी कर सके।

रहाणे की बड़ी भविष्यवाणी : टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड कप में रचेगी 300 रन का इतिहास

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के अनुभवी बल्लेबाज़ अजिंक्य रहाणे ने आगामी टी20 वर्ल्ड कप को लेकर एक साहसिक दावा किया है। उनका मानना है कि मौजूदा भारतीय टीम वह ताकत और आक्रामकता रखती है, जो इस टूर्नामेंट में पहली बार 300 रन का आंकड़ा पार कर सकती है। कप्तान सूर्यकुमार यादव की अगुवाई में भारत अपने खिताब बचाव अभियान की शुरुआत यूएसए के खिलाफ करेगा, और रहाणे के अनुसार यही टीम इतिहास रचने की मजबूत दावेदार है।

एक सोशल मीडिया प्रश्नोत्तर सत्र में जब रहाणे से पूछा गया कि क्या कोई टीम टी20 वर्ल्ड कप में 300 रन बना सकती है, तो उन्होंने बिना झिझक भारत का नाम लिया। उनकी नजर में मौजूदा स्क्वाड में गहराई, क्षमता और आक्रामक मानसिकता है, जो इस उपलब्धि को संभव बना सकती है। उन्होंने कहा कि टीम इंडिया की आधुनिक टी20 अप्रोच और बेखौफ बल्लेबाज़ी उन्हें इस रिकॉर्ड के बेहद करीब ले जा चुकी है।

सूर्यकुमार यादव की कप्तानी शैली, जिसे 'स्काईबॉलद्य' के नाम से जाना जा रहा है, भारतीय बल्लेबाज़ी की आक्रामक पहचान बन गई है। टूर्नामेंट में भारत अब तक सैकड़ों छक्के लगा चुका है और टीम के शीर्ष सात बल्लेबाज़ों का स्ट्राइक रेट भी शानदार रहा है। रहाणे का मानना है कि अगर भारतीय बल्लेबाज़ अपनी लय में रहे, तो 300 रन का आंकड़ा भी पहुंच से बाहर नहीं है।

भारत की संभावित ओपनिंग जोड़ी अभिषेक शर्मा और ईशान किशन पर भी रहाणे ने भरोसा जताया। उन्होंने कहा कि ईशान किशन की फॉर्म और तेज़ शुरुआत देने की क्षमता, साथ ही अभिषेक शर्मा का पावरप्ले में आक्रामक खेल, भारत को बड़े स्कोर तक ले जाने में अहम भूमिका निभा सकता है। संजू सैमसन बनाम ईशान किशन की चर्चा पर रहाणे ने संतुलित राय रखते हुए कहा कि भले ही ईशान लय में हों, लेकिन संजू का अनुभव भी टीम के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है। खिलाड़ियों को भरोसा देना बड़े टूर्नामेंट में निर्णायक साबित होता है।

अपनी बल्लेबाजी कौशल पर भरोसा था कि बड़े मैच में योगदान दे सकता हूं: सूर्यवंशी

नई दिल्ली(एजेंसी)। अंडर-19 विश्व कप में रिकॉर्ड छठी जीत, वैभव सूर्यवंशी की 175 रन की विस्फोटक पारी बनी भारत की सफलता की कुंजी. भारत को रिकॉर्ड छठा अंडर-19 विश्व कप खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने फाइनल में अपने स्वाभाविक अंदाज में खेलते हुए ऐसा धमाका किया, जिसने इंग्लैंड की पूरी रणनीति को ध्वस्त कर दिया। महज 14 वर्ष की उम्र में सूर्यवंशी ने 80 गेंदों पर 175 रन की अविश्वसनीय पारी खेली, जिसमें 15 छक्के और 15 चौके शामिल थे। उनकी इस पारी की बदौलत भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 411 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया और इंग्लैंड को 311 रन पर रोककर 100 रन से मुकाबला जीत लिया। फाइनल में 'प्लेयर ऑफ द मैच' और पूरे टूर्नामेंट में 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' चुने गए सूर्यवंशी ने कहा कि उन्हें अपने कौशल पर पूरा भरोसा था और टीम ने शुरुआत से ही अनावश्यक दबाव नहीं लेने की रणनीति अपनाई। मैच के बाद उन्होंने कहा कि टीम ने पूरे टूर्नामेंट में दिखाए गए प्रदर्शन को दोहराने पर जोर दिया और इसी प्रक्रिया ने उन्हें बड़े मुकाबले में जीत दिलाई। सूर्यवंशी ने बताया कि टीम पिछले 8-9 महीनों से लगातार कड़ी मेहनत कर रही थी, जिसका नतीजा अब जाकर सामने आया है। उन्होंने कहा कि एशिया कप में पाकिस्तान से हार के बाद टीम ने और ज्यादा तैयारी की, जिसका सकारात्मक असर फाइनल में भी दिखाई दिया। भारतीय कप्तान आयुष म्हात्रे ने विश्व कप जीत को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि टीम रोहित शर्मा और हरमनप्रीत कौर द्वारा स्थापित विश्व कप जीत की विरासत को आगे बढ़ाना चाहती थी। उन्होंने अपने खिलाड़ियों के प्रदर्शन की जमकर तारीफ की और कहा

कि टीम ने फाइनल में बिना दबाव के अपना स्वाभाविक खेल दिखाया। म्हात्रे ने सूर्यवंशी की बल्लेबाजी को 'जादुई' बताते हुए कहा कि उनकी पारी को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

मुख्य कोच ऋषिकेश कानिटकर ने इस जीत को 'अविश्वसनीय' करार दिया और कहा कि इंग्लैंड द्वारा दिखाए गए संघर्ष के बाद यह विजय और भी खास हो जाती है। उन्होंने कहा कि युवा खिलाड़ियों का इस तरह निखरकर सामने आना भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए बेहद सकारात्मक संकेत है। वहीं इंग्लैंड के कप्तान थॉमस रियू ने स्वीकार किया कि सूर्यवंशी की विस्फोटक बल्लेबाजी ने उनकी सारी योजनाओं को ध्वस्त कर दिया और इतनी करीब आकर ट्रॉफी गंवाना बेहद दर्दनाक है।

टी20 विश्व कप में पाकिस्तान की जीत से शुरुआत, नीदरलैंड को रोमांचक मुकाबले में 3 विकेट से हराया

नई दिल्ली (ईएमएस)। पाकिस्तान ने टी20 विश्व कप 2026 के अपने पहले ही मुकाबले में जीत दर्ज करते हुए अभियान की दमदार शुरुआत की। कोलंबो में खेले गए इस रोमांचक मैच में पाकिस्तान ने नीदरलैंड को 19.3 ओवर में 7 विकेट पर 148 रन बनाकर 3 विकेट से मात दी। इससे पहले नीदरलैंड की टीम 19.5 ओवर में 147 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। 147 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान की शुरुआत ठीक रही। सलामी बल्लेबाज सईम आयूब और साहिबजादा फरहान ने पहले विकेट के लिए 27 रन जोड़े। आयूब ने 13 गेंदों पर 24 रन बनाए, जबकि फरहान ने 31 गेंद में 47 रन की अहम पारी खेली। हालांकि बीच के ओवरों में पाकिस्तान की बल्लेबाजी लड़खड़ा गई और टीम बड़े नामों के बावजूद लगातार विकेट गंवाती रही। कप्तान सलमान अली आगा 12 रन पर आउट हुए, बाबर आजम ने 18 गेंदों में 15 रन बनाए। मोहम्मद नवाज और शादाब खान जैसी अनुभवी जोड़ियों से भी बड़ी पारी की उम्मीद थी, लेकिन दोनों नाकाम रहे। एक समय पाकिस्तान का स्कोर 17 ओवर में 115/7 था और टीम हार के काफी करीब नजर आ रही थी। आखिरी 18 गेंदों पर पाकिस्तान को 33 रन चाहिए थे। 18वें ओवर में नीदरलैंड ने सिर्फ 4 रन दिए, जिससे समीकरण और मुश्किल हो गया। इसके बाद 19वें ओवर में फहीम अशरफ ने मैच का पूरा रुख बदल दिया। लोगन के ओवर में फहीम ने पहली, तीसरी और पांचवीं गेंद पर छक्के जड़े और ओवर की अंतिम गेंद पर गेंद को बाउंड्री पार भेजकर कुल 24 रन बटोर लिए। इससे पाकिस्तान को आखिरी 6 गेंदों में सिर्फ 5 रन की जरूरत रह गई।

गावस्कर का पाकिस्तान पर निशाना : कहा – पहल हमेशा भारत ने की, जवाब कभी नहीं मिला

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भारत-पाकिस्तान मैच के बहिष्कार को लेकर जारी विवाद के बीच भारतीय क्रिकेट के दिग्गज सुनील गावस्कर ने पाकिस्तान पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने साफ कहा कि पाकिस्तान हमेशा भारत से दोस्ताना कदम बढ़ाने की उम्मीद करता है, लेकिन ऐसा कोई सकारात्मक रुख पाकिस्तान की ओर से कभी दिखाई नहीं दिया। गावस्कर ने 2008 के आईपीएल का उदाहरण देते हुए कहा कि लीग की शुरुआत में लगभग हर फ्रेंचाइजी में पाकिस्तानी खिलाड़ी मौजूद थे और कई पाकिस्तानी कमेंटेटर्स को भी भारत में काम करने का मौका मिला। उनके मुताबिक, भारत ने तब भी रिश्ता सुधारने की पहल की थी, जबकि पाकिस्तान की ओर से वैसी भावना कभी नजर नहीं आई, यहां तक कि तब भी जब दोनों देशों के रिश्तों में आज जैसी तल्खियां नहीं थीं। उन्होंने सिर्फ क्रिकेट ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मुद्दा भी उठाया और पूछा कि कितने भारतीय कलाकारों या गायकों को पाकिस्तानी फिल्मों में काम करने का मौका मिला। गावस्कर ने कहा कि भारत हमेशा पहला कदम उठाता है और किसी तरह की 卐बुलींग卐 नहीं कर रहा, बल्कि अपनी राह पर चलता रहा है। उनकी यह प्रतिक्रिया उस समय सामने आई है जब पाकिस्तान ने 15 फरवरी को कोलंबो के आर. प्रेमदासा स्टेडियम में होने वाले भारत के खिलाफ मैच में उतरने से इनकार कर दिया है। हालांकि पाकिस्तान सरकार ने टीम को टूर्नामेंट में खेलने की मंजूरी दे दी है, लेकिन भारत के खिलाफ मुकाबले को लेकर रुख सख्त बना हुआ है। यह फैसला पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने बांग्लादेश के समर्थन में लिया है, जिसे वेन्यू बदलने की अनुमति नहीं मिली और वह टूर्नामेंट से हट गया। उसकी जगह स्कॉटलैंड को शामिल किया गया। इस मुद्दे पर आईसीसी ने नाराजगी जताते हुए पीसीबी को चेतावनी दी है कि बहिष्कार का यह फैसला पाकिस्तान क्रिकेट के भविष्य को नुकसान पहुंचा सकता है और वैश्विक क्रिकेट के हित में बिल्कुल नहीं है। टी20 वर्ल्ड कप में भारत-पाकिस्तान के आमने-सामने के रिकॉर्ड की बात करें, तो भारतीय टीम पूरी तरह हावी रही है। दोनों टीमों के बीच अब तक हुए 8 मुकाबलों में भारत ने 7 बार जीत दर्ज की है।

बॉक्सम एलीट 2026: सचिन और लवलीना की अगुवाई में 12 भारतीय फाइनल में पहुंचे

ला नुसिया (एजेंसी)। शानदार प्रदर्शन से भरे एक और सेशन के बाद आठ महिलाओं और चार पुरुषों सहित 12 भारतीय बॉक्सम एलीट इंटरनेशनल 2026 के आखिरी दिन गोल्ड के लिए मुकाबला करेंगे। पुरुषों की तरफ से सचिन (60किग्रा) ने मोर्चा संभाला, जिन्होंने इंग्लैंड के जैक ड्राइडन पर एक और शानदार जीत के साथ अपनी बेहतरीन लय जारी रखी। महिलाओं के सेक्शन में, ओलंपिक मेडलिस्ट लवलीना बोरगोहेन (75किग्रा) ने वेल्स की रोजी एक्लेस पर सर्वसम्मत जीत के साथ फाइनल में जगह बनाई।

ला नुसिया, एलिकांटे, स्पेन में आयोजित बॉक्सम एलीट 2026 में 20 देशों के 200 से ज़्यादा मुक्केबाजों ने हिस्सा लिया। शनिवार के फाइनल में भारत (12) सबसे ज़्यादा प्रतिनिधित्व वाला देश है - जो दिग्गज कजाकिस्तान (11), यूक्रेन (5), और मेजबान स्पेन (4) से आगे है - और कम से कम एक गोल्ड पक्का है, क्योंकि एलीट महिला 54किग्रा का फाइनल पूरी तरह से भारतीयों के बीच होगा।

भारत की महिलाओं ने अलग-अलग कैटेगरी में सेमीफाइनल में शानदार जीत के साथ अपना मजबूत प्रदर्शन जारी रखा, जिसमें 54किग्रा कैटेगरी में गोल्ड पक्का होना सबसे खास रहा, जहां प्रीति और पूनम खिताब के लिए आमने-सामने होंगी। इसके अलावा, मंजू रानी (48), नीतू (51), प्रिया (60), अरुंधति चौधरी (70) और नैना (80) सभी ने शानदार जीत के साथ फाइनल में जगह बनाई, जो अलग-अलग वेट क्लास में भारत की गहराई और निरंतरता को दिखाता है।

पुरुषों की प्रतियोगिता में दीपक (70), आकाश (75) और अंकुश (80) के शानदार प्रदर्शन से भारत के और फाइनलिस्ट बने। दीपक ने कजाकिस्तान के वर्ल्ड बॉक्सिंग कप फाइनल के सिल्वर मेडलिस्ट नुरबेक मुरसल के खिलाफ पहले राउंड में ही आरएससी से जीत हासिल करके सेशन के सबसे खास पलों में से एक दिया, जबकि आकाश और अंकुश ने कजाख विरोधियों के खिलाफ मुश्किल मुकाबलों में जीत हासिल करके शनिवार को गोल्ड मेडल के मुकाबलों में अपनी जगह पक्की की।

भारत के कैंपेन में कई बॉक्सर्स सेमीफाइनल में हारने के बाद ब्रॉन्ज मेडल जीतकर पोडियम पर पहुंचे, जिनमें महिलाओं के मुकाबले में प्रांजल यादव (65), काजल (65), सनामचा चानू (75) और मनकीरत कौर (80) शामिल हैं। पुरुषों के ड्रॉ में जदुमणि सिंह (55), मोहम्मद हुसाम उद्दीन (60), और हितेश गुलिया (70) ने ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया।

एलेक्जेंड्रोवा ने मैच पॉइंट बचाकर अबू धाबी फाइनल में जगह बनाई

अबू धाबी (एजेंसी)। एकातेरिना एलेक्जेंड्रोवा ने मुबाडाला अबू धाबी ओपन फाइनल में पहुंचने के लिए काफी अच्छा प्रदर्शन किया, शुक्रवार शाम को तीन सेट में हैली बैपटिस्ट को हराने से पहले एक मैच पॉइंट बचाया। बैपटिस्ट ने पहला सेट जीता और दूसरे सेट में 5-4 पर एलेक्जेंड्रोवा की सर्विस पर मैच पॉइंट हासिल किया। एलेक्जेंड्रोवा ने इसे बचाया, सर्विस बरकरार रखी, और सेट को टाईब्रेक तक पहुंचाया, जहां उन्होंने 5-4 से पीछे होने के बाद अंतिम तीन पॉइंट जीतकर निर्णायक सेट के लिए मजबूर किया। उन्होंने तीसरे सेट की शुरुआत में सर्विस बरकरार रखी, 2-0 से बढ़त बनाई और 4-2 से आगे रहते हुए थोड़े समय के लिए लड़खड़ाने के अलावा, ढाई घंटे में 3-6, 7-6 (5), 6-3 की जीत के साथ मैच को नियंत्रित किया। इस जीत के साथ वह अपने करियर के 13वें फाइनल में पहुंच गई हैं। एलेक्जेंड्रोवा ने कोर्ट पर इंटरव्यू में हंसते हुए कहा, 'बहुत अच्छा लग रहा है। मैंने मैच के दौरान इसके बारे में नहीं सोचा था। (लेकिन) आप जानते हैं, इस मुश्किल मैच के बाद, मुझे लगता है कि यह काफी अच्छी खबर है जो आपने मुझे अभी बताई।' अन्य सकारात्मक बातों में उनके द्वारा लगाए गए 33 विनर्स और यह तथ्य शामिल है कि उन्होंने सर्विसिंग की लड़ाई में बैपटिस्ट को पछाड़ दिया, लेकिन शनिवार के फाइनल से पहले अभी भी बहुत कुछ सुधार करने की ज़रूरत है। उन्होंने 59 अनफोर्स्ड एरर किए और नेट पर काफी संघर्ष किया, पास से 13 में से सिर्फ 4 पॉइंट जीते। उन्होंने शुक्रवार को साबित कर दिया कि वह इन आंकड़ों से उबर सकती हैं, लेकिन उन्हें सारा बेजलेक के खिलाफ और भी बेहतर प्रदर्शन करना होगा, जो क्वालीफाइंग से आई हैं और सेमीफाइनल में क्लारा टौसन को दो घंटे 49 मिनट में 7-5, 3-6, 7-5 से हराकर अपने करियर के पहले डब्ल्यूटीए फाइनल में पहुंची हैं।

भारत के खिलाफ मैच से इनकार पर आईसीसी ने पाकिस्तान से मांगा जवाब

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) से यह स्पष्ट करने को कहा है कि भारत के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप 2026 के मैच से इनकार को वह 'फोर्स मेज्योर' प्रावधान के तहत कैसे सही ठहरा सकता है। पीसीबी ने हाल ही में आईसीसी को पत्र लिखकर दावा किया था कि पाकिस्तान सरकार के निर्देश के कारण टीम 15 फरवरी को कोलंबो में होने वाले इस अहम मुकाबले में हिस्सा नहीं ले सकती। अब आईसीसी ने इस दावे पर गंभीर सवाल उठाते हुए विस्तृत स्पष्टीकरण मांगा है। आईसीसी ने अपने जवाब में पूछा है कि जब पाकिस्तान टीम सरकार के निर्देशों के तहत पूरे टूर्नामेंट में बाकी सभी मैच खेलने को तैयार है, तो सिर्फ भारत के खिलाफ मुकाबले से हटने को 'फोर्स मेज्योर' कैसे माना जा सकता है। संस्था का कहना है कि किसी एक मैच को चुनकर उससे इनकार करना टूर्नामेंट के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है और इससे खेल की निष्पक्षता पर भी असर पड़ता है। पीसीबी ने सरकार के सोशल मीडिया पोस्ट का हवाला देते हुए दावा किया था कि यह स्थिति 'फोर्स मेज्योर' के तहत आती है, क्योंकि यह उनके नियंत्रण से बाहर है। हालांकि आईसीसी का मानना है कि इस प्रावधान का इस्तेमाल तभी मान्य माना जाता है जब घटना अप्रत्याशित, अनिवार्य और अपरिहार्य हो, और प्रभावित पक्ष इस बात के प्रमाण दे कि उसने नुकसान को कम करने के लिए सभी संभव प्रयास किए। सिर्फ राजनीतिक असहमति या असुविधा इस प्रावधान के तहत नहीं आती। सूत्रों के अनुसार, पीसीबी ने आईसीसी की औपचारिक चिट्ठी प्राप्त होने के बाद बातचीत का सिलसिला शुरू कर दिया है। आईसीसी इस मुद्दे को सुलझाने के लिए पीसीबी के साथ लगातार संपर्क में है और चाहता है कि क्रिकेट के हित में कोई संतुलित समाधान निकले। पाकिस्तान सरकार पहले ही घोषणा कर चुकी है कि टीम केवल भारत के खिलाफ मैच में हिस्सा नहीं लेगी, जबकि बाकी सभी मुकाबले खेलेगी।

हार्दिक पांड्या का बड़ा लक्ष्य: 'मैं भारत के लिए ज्यादा से ज्यादा आईसीसी ट्रॉफी जीतना चाहता हूं'

मुंबई (एजेंसी)। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भारत के पहले मुकाबले से पहले हार्दिक पांड्या पूरे आत्मविश्वास और जुनून के साथ नजर आ रहे हैं। ऑलराउंडर हार्दिक का मानना है कि इंटरनेशनल क्रिकेट में उनका असली सफर अब शुरू हुआ है। 10 साल के अनुभव के साथ वह खुद को पहले से ज्यादा परिपक्व, खतरनाक और प्रभावशाली खिलाड़ी मानते हैं। उनका लक्ष्य साफ है–भारत के लिए ज्यादा से ज्यादा आईसीसी ट्रॉफी जीतना और बड़े मंच पर खुद को निर्णायक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना।

वानखेड़े में सबकी नजरें हार्दिक पर

जब टीम इंडिया USA के खिलाफ वानखेड़े स्टेडियम में अपने खिताब बचाने के अभियान की शुरुआत करेगी, तो हार्दिक पांड्या आकर्षण का केंद्र होंगे। उनके आत्मविश्वास, आक्रामक शॉट्स, मैदान पर ऊर्जा और बड़े मौकों पर प्रदर्शन ने उन्हें भारत के सबसे भरोसेमंद मैच-विनर खिलाड़ियों में शामिल कर दिया है। फैंस को उम्मीद है कि पूरे टूर्नामेंट में हार्दिक अपने खेल से कई यादगार पल देंगे।

'मेरा सफर अभी शुरू हुआ है'

स्टार स्पोर्ट्स से बातचीत में हार्दिक ने कहा कि वह भारत के लिए कम से कम चार से पांच और आईसीसी ट्रॉफी जीतना चाहते हैं। उनके अनुसार, 10 साल का अंतरराष्ट्रीय अनुभव उन्हें और ज्यादा मजबूत बनाता है। उन्होंने कहा कि एक बल्लेबाज के तौर पर उनकी क्षमता अब और निखर कर सामने आएगी और वह विरोधी टीमों के लिए 'डरावने' साबित हो सकते हैं।

जीत और प्रदर्शन पर पूरा फोकस

हार्दिक ने साफ किया कि उनके लिए खेल की कीमत किसी भी ब्रांड या चीज़ से ज्यादा है। उन्होंने कहा कि मैदान पर लिया गया हर कैच और खेली गई हर गेंद सबसे कीमती होती है। यह बयान उनके प्रोफेशनल रवैये और खेल के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

टी20 वर्ल्ड कप 2024 में अहम भूमिका

भारत की 2024 टी20 वर्ल्ड कप जीत में हार्दिक पांड्या का योगदान बेहद अहम रहा। उन्होंने छह पारियों में 144 रन बनाए, उनका औसत 48.00 और स्ट्राइक रेट 151 से ज्यादा रहा। गेंदबाजी में भी उन्होंने 11 विकेट झटके। फाइनल में साउथ अफ्रीका के खिलाफ 3/20 का प्रदर्शन कर उन्होंने मैच का रुख भारत के पक्ष में मोड़ दिया।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के अनसंग हीरो

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में हार्दिक भले ही सुर्खियों में कम रहे हों, लेकिन उनका योगदान निर्णायक था। उन्होंने चार पारियों में उपयोगी रन बनाए और जरूरत के समय विकेट भी लिए। उनकी छोटी लेकिन प्रभावी पारियों ने भारत को खिताब जीतने में मदद की।

ओलंपियन सुशील कुमार की जमानत अर्जी अदालत ने खारिज की

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने छत्रसाल स्टेडियम में पूर्व जूनियर राष्ट्रीय कुश्ती चैंपियन सागर धनकड़ की हत्या से जुड़े मामले में आरोपी ओलंपियन सुशील कुमार की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश मामले की सुनवाई कर रहे थे, जिसमें सुशील कुमार ने नियमित जमानत की मांग की थी। सुशील कुमार और अन्य आरोपियों पर आरोप है कि मई 2021 में कथित संपत्ति विवाद के चलते उन्होंने सागर धनकड़ और उनके साथियों पर जानलेवा हमला किया था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सामने आया था कि धनकड़ को किसी भारी वस्तु से सिर में गंभीर चोट पहुंचाई गई, जिसके कारण उनकी मौत हुई। इस घटना में धनकड़ के दो दोस्त भी घायल हुए थे। घटना के तुरंत बाद सुशील कुमार को मई 2021 में गिरफ्तार कर लिया गया था। इससे पहले अदालत ने 19 जुलाई 2023 को उनकी घुटने की सर्जरी के लिए एक सप्ताह की अंतरिम जमानत मंजूर की थी। लेकिन नियमित जमानत को लेकर उनकी पिछली अर्जी और अब दायर ताजा अर्जी दोनों को अदालत ने निरस्त कर दिया। अक्टूबर 2022 में अदालत ने भारतीय दंड संहिता की हत्या, आपराधिक साजिश, धमकी और घातक हथियारों से दंगा करने जैसी गंभीर धाराओं में सुशील कुमार के खिलाफ आरोप तय किए थे। इसके अतिरिक्त, उनके विरुद्ध हथियार अधिनियम के तहत भी कार्रवाई तय की गई है। अदालत ने माना था कि धनकड़ को कथित रूप से अगवा कर स्टेडियम लाया गया और वहां कई आरोपियों ने बेसबॉल व हॉकी स्टिक से उन पर हमला किया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

सैकड़ों स्कूल खोलने वाली भारतीय शिक्षिका को नौ करोड़ का पुरस्कार

दुबई , एजेंसी। सैकड़ों स्कूल खोलने वाली भारतीय शिक्षिका रूबल नागी को नौ करोड़ रुपये का वैश्विक पुरस्कार दिया गया है। सामाजिक कार्यकर्ता नागी को बृहस्पतिवार को संयुक्त अरब अमीरात के दुबई में वर्ल्ड गवर्नमेंट्स समिट में इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह एक सालाना आयोजन है, जिसमें दुनिया भर के नेता इकट्ठा होते हैं। रूबल ने कहा कि वह इस राशि से नि:शुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करेंगी। रूबल के आर्ट फाउंडेशन ने भारत भर में 800 से अधिक शिक्षण केंद्र स्थापित किए हैं।

जापान चुनाव से पहले ट्रंप का पीएम ताकाइची को समर्थन

टोक्यो, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जापान की प्रधानमंत्री सानाए ताकाइची को रविवार को होने वाले संसदीय चुनाव से पहले पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की। ट्रंप ने यह भी बताया कि दोनों नेता 19 मार्च को व्हाइट हाउस में मुलाकात करेंगे। ट्रंप ने बृहस्पतिवार को सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि प्रधानमंत्री ताकाइची और उनका गठबंधन जिस तरह काम कर रहा है, वह मजबूत जनसमर्थन के हकदार हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में उन्हें ताकाइची और उनके सम्मानित गठबंधन का पूरी तरह समर्थन देने पर गर्व है। विशेषज्ञ ट्रंप के समर्थन को चुनाव से पहले एक अहम राजनीतिक संकेत के तौर पर देखा जा रहा है।

सिंगापुर में सैन्य विमान आपूर्ति समारोह में आ सकते हैं पीएम मोदी

सिंगापुर , एजेंसी। पीएम नरेंद्र मोदी के टाटा-एयरबस की वडोदरा असेंबली लाइन से रक्षा मंत्रालय को सैन्य विमान की आपूर्ति करने के मौके पर वह कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपूर्ति वर्ष की दूसरी छमाही में की जा सकती है। एयरबस अध्यक्ष और कार्यकारी समिति के सदस्य वाउटर वान वर्श ने कहा, सैन्य परिवहन विमान 'सी-295' टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमि. व एयरबस के साझा उद्यम वडोदरा असेंबली लाइन से निकला पहला 'मेड इन इंडिया' उत्पाद होगा। 'सी-295' के विनिर्माण में इस्तेमाल होने वाले 70% घटक भारत से लिए गए हैं जबकि 30% आयातित हैं। इनमें कनेक्टिकट मुख्यालय वाली प्रैट एंड व्हिटनी का इंजन लगा है। वडोदरा संयंत्र से रक्षा मंत्रालय के साथ हुए अनुबंध के तहत बनने वाले 56 विमानों में से 40 विमान भारतीय वायुसेना को सौंपे जाने की उम्मीद है। 16 विमान स्पेन स्थित इकाई से मिल चुके हैं।

पेनसिल्वेनिया के अस्पताल में आग

हैरिसबर्ग, एजेंसी। उत्तर-पूर्वी पेनसिल्वेनिया के लीहाई वैली अस्पताल में रात के समय आग लग गई, जिससे 70 से अधिक मरीजों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। आग पुराने भवन की छत पर लगी थी, मुख्य अस्पताल भवन सुरक्षित रहा। अस्पताल कर्मचारियों और पुलिस की मदद से सभी मरीजों को एम्बुलेंस में दूसरे अस्पतालों में भेजा गया। 5 मरीजों की हालत सामान्य, 1 की गंभीर और 3 की स्थिति ठीक बताई गई। आग से किसी को चोट नहीं आई। राज्य पुलिस और आपातकालीन टीमों ने तुरंत मदद पहुंचाई। गवर्नर जोश शापिरो ने सभी फायरफाइटर और इमरजेंसी टीम का धन्यवाद किया और मरीजों व उनके परिवारों के लिए प्रार्थना की।

कनेक्टिकट में मालगाड़ी पटरी से उतरी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के एक मालगाड़ी बुधवार सुबह विलिमैंटिक नदी के पास पटरी से उतर गई। ट्रेन के 14 में से 6 डिब्बे गिर गए, जिनमें 4 डिब्बे पानी में चले गए। कुछ डिब्बों में लिक्विड प्रोपेन था। किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। स्थानीय अधिकारियों ने पास के लोगों को घर के अंदर रहने की सलाह दी, लेकिन कोई निकासी नहीं की गई। स्कूलों के लिए बस मार्ग बदले गए। फायर विभाग और हजमैट टीम ने नदी में सुरक्षा के लिए बूम लगाया। अधिकारी कह रहे हैं कि दुर्घटना की जांच जारी है और रिकवरी में कई दिन लग सकते हैं।

कांगो में राष्ट्रपति चुनाव

किंशासा, एजेंसी। राष्ट्रपति डेनिस सासु-एनगेस्सो ने मार्च 15 को होने वाले चुनाव में फिर से भाग लेने की घोषणा की। 82 साल के सासु-एनगेस्सो पहले 1979 में सत्ता में आए थे और अब तक लगभग लगातार शासन कर रहे हैं। मुख्य विपक्षी पार्टी इस चुनाव में उम्मीदवार नहीं उतारेगी। उन्हें करीब दर्जन भर छोटे उम्मीदवारों का मुकाबला हो सकता है। 2015 में राष्ट्रपति पद की उम्र और कार्यकाल सीमा हटा दी गई थी, जिससे वे फिर चुनाव लड़ सकते हैं। सासु-एनगेस्सो को लंबे समय से सत्ता में बने रहने वाला अफ्रीका का एक सबसे अनुभवी नेता माना जाता है।

ईरान में अमेरिकी नागरिकों को चेतावनी- तुरंत बाहर निकले

सरकारी मदद पर निर्भर न रहें, खुद इंतजाम करें

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान, एजेंसी। अमेरिका ने ईरान में रह रहे अपने नागरिकों को तुरंत देश छोड़ने की सख्त चेतावनी दी है। अमेरिकी दूतावास ने कहा है कि देश में सुरक्षा की स्थिति बेहद खराब हो गई है। बढ़ती अशांति, पाबंदियां और यात्रा में रुकावटें लोगों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन रही हैं।

एम्बेसी ने साफ कहा है कि जल्द से जल्द ईरान छोड़ दें। अपने निकलने का प्लान खुद बनाएं और इसमें अमेरिकी सरकार की मदद पर भरोसा न करें। मौजूदा हालात में आधिकारिक सहायता बेहद सीमित है। ' ईरान में देशव्यापी विरोध प्रदर्शन और अशांति के कारण सुरक्षा व्यवस्था सख्त हो गई है। सड़कें बंद हैं, सार्वजनिक परिवहन ठप है, इंटरनेट और मोबाइल-लैंडलाइन सेवाएं बार-बार बाधित हो रही हैं। कई एयरलाइंस ने ईरान आने-जाने वाली उड़ानों को सीमित या रद्द कर दिया है, जिससे बाहर निकलना और भी मुश्किल हो गया है। अमेरिकी चेतावनी में कहा गया है कि अगर तुरंत निकलना संभव न हो तो सुरक्षित जगह पर रहें। वहां खाना, पानी, दवाइयां और जरूरी सामान का स्टॉक रखें। इंटरनेट ब्लैकआउट जारी रहने की संभावना है, इसलिए परिवार और दोस्तों से संपर्क के लिए दूसरे तरीके सोचें।

दूतावास ने दोहरी नागरिकता वाले लोगों के लिए ज्यादा खतरा बताया : अमेरिकी एम्बेसी ने अमेरिका-ईरान की दोहरी नागरिकता रखने वाले लोगों के लिए ज्यादा खतरा बताया है। ईरान दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देता, इसलिए ऐसे लोग ईरानी पासपोर्ट से ही बाहर निकल सकते हैं। अमेरिकी पासपोर्ट दिखाना या अमेरिका से जुड़ाव जाहिर करना ईरानी अधिकारियों के लिए हिरासत में लेने का कारण बन सकता है। ऐसे में पूछताछ, गिरफ्तारी या लंबी हिरासत का खतरा है। जो अमेरिकी नागरिक बिना वैध अमेरिकी पासपोर्ट के हैं, उन्हें ईरान छोड़ने के बाद नजदीकी अमेरिकी दूतावास से पासपोर्ट बनवाने की सलाह दी गई है। लोगों को प्रदर्शनों से दूर रहने और फोन चार्ज रखने की सलाह अमेरिकी सरकार ने साफ किया है कि ईरान में कूटनीतिक और कांसुलर संबंध न होने की वजह से वह अपने नागरिकों की मदद करने की स्थिति में नहीं है। अमेरिका के हितों का प्रतिनिधित्व तेहरान में स्विट्जरलैंड दूतावास करता है। रूटीन कांसुलर सेवाएं बंद हैं और हालात में सुधार के कोई संकेत नहीं दिख रहे, इसलिए अमेरिकी नागरिकों से खुद ही सुरक्षित निकलने की ठोस योजना बनाने की अपील की गई है। सुरक्षा के लिए कुछ जरूरी सलाह भी दी गई है, जैसे प्रदर्शनों और भीड़-भाड़ वाली जगहों से दूर रहें, फोन हमेशा चार्ज रखें, परिवार से संपर्क बनाए रखें और स्थानीय मीडिया पर नजर रखकर हालात की जानकारी लेते रहें। ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु मुद्दे पर आज बातचीत होगी अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु वार्ता आज (शुक्रवार) ओमान की राजधानी मस्कट में शुरू हो रही है। यह बैठक ओमान के स्थानीय समय के अनुसार सुबह 10 बजे (भारतीय समय के अनुसार रात 11:30 बजे) से शुरू होगी। यह पिछले करीब नौ महीनों में दोनों देशों के बीच पहली औपचारिक बैठक है, जो जून 2025 में हुए संघर्ष के बाद से निलंबित थी। हाई-लेवल वार्ता से पहले व्हाइट हाउस ने कहा है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कूटनीति के पक्ष में हैं, लेकिन अगर बातचीत नाकाम होती है तो ताकत का इस्तेमाल करने के लिए भी तैयार हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलाइन लेविट ने गुरुवार को पत्रकारों से कहा कि ट्रम्प ओमान में होने वाली बातचीत में देखना चाहते हैं कि क्या कोई समझौता हो सकता है। साथ ही उन्होंने ट्रम्प की मांग दोहराई कि ईरान के पास जीरो परमाणु क्षमता होनी चाहिए। उन्होंने चेतावनी भी दी कि अगर बातचीत से नतीजा नहीं निकला तो राष्ट्रपति के पास कई विकल्प मौजूद हैं। यूएस सेंट्रल कमांड ने पुष्टि की है कि ईरान के पास कैरियर स्ट्राइक ग्रुप 3 का प्रमुख जहाज, न्यूक्लियर पावर्ड एयरक्राफ्ट कैरियर यूएसएस अब्राहम लिंकन (सीवीएन-72) अभियानों में लगा हुआ है।

न्यूयॉर्क मेयर ममदानी ने हिजाब को मुस्लिम महिलाओं की पहचान बताया

न्यूयॉर्क, एजेंसी। न्यूयॉर्क सिटी के मेयर जोहरान ममदानी अपने एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर विवाद में घिर गए हैं। 1 फरवरी को वर्ल्ड हिजाब डे के मौके पर उनके ऑफिस की ओर से किए गए एक पोस्ट को लेकर मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने कड़ी आपत्ति जताई है। आलोचकों का कहना है कि यह पोस्ट ईरान में महिलाओं पर लागू जबरन हिजाब कानूनों और वहां हो रहे दमन को नजरअंदाज करता है।

मेयर के ऑफिस ऑफ इमिग्रेंट अफेयर्स की ओर से साझा किए गए पोस्ट में कहा गया था कि दुनिया भर की उन मुस्लिम महिलाओं और लड़कियों की आस्था, पहचान और गर्व का जश्न मनाया जा रहा है, जो हिजाब पहनना चुनती हैं। इस पोस्ट की टाइमिंग और भाषा को लेकर आलोचकों ने सवाल उठाए। उनका कहना है कि ईरान में हिजाब पहनने से इनकार करने पर महिलाओं को गिरफ्तार किया जा रहा है, पीटा जा रहा है और कई मामलों में उनकी जान तक चली गई है। ऐसे माहौल में हिजाब को गर्व और उत्सव के प्रतीक के रूप में पेश करना संवेदनहीन है। ईरानी-अमेरिकी पत्रकार और एक्टिविस्ट मसीह अलीनेजाद ने मेयर को सीधे संबोधित करते हुए कहा कि न्यूयॉर्क जैसे शहर में रहते हुए भी उन्हें यह पोस्ट देखकर मानसिक पीड़ा हो रही है। उन्होंने लिखा कि ईरान में महिलाएं हिजाब और उससे जुड़ी इस्लामिक विचारधारा को न मानने पर जेल भेजी जा रही हैं, गोली मारी जा रही हैं, जबकि न्यूयॉर्क में उसी प्रतीक का जश्न मनाया जा रहा है। तुर्किए-अमेरिकी अर्थशास्त्री और राजनीतिक वैज्ञानिक तैमूर कुरान ने कहा कि ईरान, तुर्किए और सऊदी अरब जैसे देशों में लाखों मुसलमान इसे गर्व नहीं बल्कि उत्पीड़न का प्रतीक मानते हैं। तैमूर कुरान ने यह भी कहा कि किसी एक धार्मिक परिधान की आधिकारिक रूप से प्रशंसा करना धार्मिक पक्षपात जैसा लग सकता है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या शहर प्रशासन अन्य धर्मों के प्रतीकों के साथ भी ऐसा ही करेगा। उनके मुताबिक, पहचान की राजनीति पहले ही अमेरिका में गहरे विभाजन पैदा कर चुकी है और यह पोस्ट उन तनावों को और बढ़ाती है।

तिब्बत में जोरदार भूकंप के झटके, तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 4.5 मापी गई

ल्हासा, एजेंसी। तिब्बत में रात करीब 2.30 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के मुताबिक भूकंप का केंद्र धरती के 25 किलोमीटर नीचे था, वहीं भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 4.5 मापी गई है। बता दें कि भूकंप का केंद्र जब धरती के ज्यादा नीचे नहीं होता है तो वह ज्यादा खतरनाक होता है। दरअसल उथले भूकंप में की सीस्मिक तरंगें धरती पर कम दूरी तक जाती हैं जिससे की धरती ज्यादा तेज हिलती है। इससे इमारतों को ज्यादा नुकसान होता है। तिब्बती पठार को भूकंप संभावित क्षेत्रों में रखा गया है। यहां टेक्टोनिक प्लेटों में टकराव होता रहता है। तिब्बत और नेपाल एक बड़ी जियोलॉजिकल फाल्ट लाइन पर हैं और इसलिए यहां अकसर भूकंप आया करते हैं। यूरेशियल प्लेट से टकराने की वजह से अकसर धरती हिल जाती है। यह पठार पूर्व से पश्चिम की ओर फैला है। टेक्टोनिक प्लेट्स के उठने की वजह से हिमायल की चोटी तक भूकंप के झटके महसूस होते हैं। दक्षिणी तिब्बत में 1970 के दशक के आखिर में और 1980 के दशक की शुरुआत में सैटेलाइट इमेज का इस्तेमाल करके सात उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली दरारें और नॉर्मल फॉल्ट की पहचान की गई थी। माना जाता है कि ये फाल्ट लाइन्स 8 लाख साल पहले बनी थीं। तिब्बत में स्ट्राइक स्लिप फाल्स्ट्स पर 8 तीव्रता तक का भूकंप आ चुका है। वहीं नॉर्मल फाइल्ट लाइन पर 4 से 7 तीव्रता तक के भूंकप आते हैं। बता दें कि अभी दो दिन पहले ही म्यांमार में 6.0 तीव्रता का भूकंप आया था। इस भूकंप के झटके कोलकाता तक महसूस किए गए थे। इसका केंद्र येनांगयौंग से लगभग 95 किलोमीटर पश्चिम में था। धरती के नीचे टेक्टॉनिक प्लेटों में हलचल की वजह से ही भूकंप आते हैं। धरती की बाहरी परत कई भागों में बंटी है जो कि धीरे-धीरे घूमती है। जब ये प्लेटें आपस में टकराती हैं तो नीचे की ऊर्जा रिलीज होती है। भारत और म्यांमार के बीच इंडियन प्लेट और यूरेशियनल प्लेट में टकराव होता है और इस वजह से भूकंप आता है।

डिएगो गार्सिया में सैन्य कार्रवाई से पीछे नहीं हटेंगे ट्रंप

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने डिएगो गार्सिया में अमेरिकी सेना की मौजूदगी को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने साफ किया है कि वे इस मिलिट्री बेस की सुरक्षा को कभी खतरे में नहीं पड़ने देंगे। ट्रंप ने चेतावनी दी कि अगर भविष्य में कोई समझौता टूटता है या अमेरिकी सेना पर खतरा आता है, तो उनके पास बेस को सैन्य तरीके से सुरक्षित और मजबूत करने का पूरा अधिकार है।

क्या बोले ट्रंप : ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर बताया कि उन्होंने इस मुद्दे पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से बात की है। उन्होंने कहा कि हिंद महासागर के बीच में स्थित यह बेस अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत जरूरी है। ट्रंप के अनुसार, पिछले एक साल में अमेरिकी सेना के कई ऑपरेशन इन बेस की रणनीतिक स्थिति की वजह से ही सफल रहे हैं।

ट्रंप ने दी चेतावनी : ब्रिटेन और मॉरीशस के बीच हुए लीज समझौते पर ट्रंप ने कहा कि वे ब्रिटिश प्रधानमंत्री की स्थिति को समझते हैं। उनके मुताबिक, स्टार्मर ने जो डील की है, वह उस समय की सबसे अच्छी डील हो सकती थी। लेकिन उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि अगर भविष्य में यह डील टूटती है या बेस पर कोई खतरा आता है, तो वे सैन्य कार्रवाई करने से पीछे नहीं हटेंगे।

ट्रंप ने वहां अमेरिकी मौजूदगी पर उठने वाले सवालों को भी खारिज कर दिया। उन्होंने लिखा, 'यह जान लें कि मैं इतने महत्वपूर्ण बेस पर हमारी मौजूदगी को कभी भी झूठे दावों या पर्यावरण के नाम पर होने वाली बातों से कमजोर नहीं पड़ने दूंगा।'

प्रेस सेक्रेटरी ने भी ट्रंप के बयान को दोहराया : व्हाइट हाउस की प्रेस सेक्रेटरी कैरोलिन लेविट ने भी इस संदेश को दोहराया। उन्होंने कहा कि ट्रंप ने स्टार्मर से सीधे बात की थी और वे उनकी स्थिति का समर्थन करते हैं। लेविट ने जोर देकर कहा कि जरूरत पड़ने पर अमेरिका दुनिया में कहीं भी, जिसमें डिएगो गार्सिया भी शामिल है, अपनी संपत्ति की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाएगा। उन्होंने साफ किया कि अमेरिका अपनी संपत्ति की रक्षा करने का अधिकार रखता है।

अमेरिका के लिए क्यों खास है डिएगो गार्सिया : डिएगो गार्सिया अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण विदेशी सैन्य ठिकानों में से एक है। यह मध्य पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण एशिया में अमेरिकी सैन्य शक्ति के लिए एक मुख्य केंद्र के रूप में काम करता है। यह द्वीप लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय कानूनी और राजनीतिक चर्चाओं का केंद्र भी रहा है। फिलहाल लेविट ने लीज समझौते या भविष्य के फैसलों के लिए किसी समय सीमा की जानकारी नहीं दी है।

बलूचिस्तान में सेना का ऑपरेशन खत्म, 216 लड़ाके ढेर करने का दावा; 50 से ज्यादा नागरिक-सैनिक हताहत

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तानी सेना ने गुरुवार को जानकारी दी कि अशांत बलूचिस्तान प्रांत में विद्रोहियों के खिलाफ चलाए गए अभियान में 216 विद्रोही मारे गए हैं। हालांकि, कई दिनों तक चले इस खूनी संघर्ष में 36 आम नागरिकों और सेना के 22 जवानों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी। सेना की मीडिया विंग, इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने एक बयान दावा किया कि 26 जनवरी को शुरू किया गया 'रद-उल-फितना-1' नाम का यह ऑपरेशन अब सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है।

क्या बोली पाकिस्तानी सेना : सेना ने बताया कि पंजगुर और हरनाई जिले के बाहरी इलाकों में विद्रोहियों के

छिपे होने की पक्की खुफिया जानकारी मिली थी। इसके बाद सुरक्षा बलों ने वहां कार्रवाई शुरू की। सेना ने विद्रोहियों के ठिकानों पर हमला बोला, जिसमें शुरुआत में 41 विद्रोही मारे गए। बाद में सुरक्षा बलों की जवाबी कार्रवाई और सफाई अभियान के दौरान कुल 216 विद्रोहियों को मार गिराया गया। सेना का दावा है कि इस कार्रवाई से विद्रोही नेटवर्क के नेतृत्व, उनके कमांड स्ट्रक्चर और काम करने की क्षमता को भारी नुकसान पहुंचा है।

रेलवे हुआ बहाल : इस बीच, पाकिस्तान रेलवे के प्रवक्ता मुहम्मद काशिफ ने बताया कि पांच दिनों तक बंद रहने के बाद बलूचिस्तान में रेल सेवा फिर से बहाल कर दी गई है। हमलों के दौरान कई जगहों पर रेलवे ट्रैक को नुकसान पहुंचा था, जिससे सुरक्षा कारणों से क्वेटा से ट्रेनों की आवाजाही रोक दी गई थी। अब मरम्मत के बाद यातायात सामान्य हो रहा है।

असेंबली में पास हुए प्रस्ताव : उधर, पाकिस्तान की नेशनल असेंबली ने मंगलवार को एक प्रस्ताव पास किया। इसमें सरकार से मांग की गई कि वह विद्रोही और उसे मदद देने वालों के खिलाफ एक सख्त और आक्रामक राष्ट्रीय रणनीति अपनाए। गौरतलब है कि ईरान और अफगानिस्तान सीमा से सटा बलूचिस्तान लंबे समय से हिंसा का केंद्र रहा है। यहां बलूच विद्रोही अक्सर 60 अरब डॉलर वाले चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर (सी-पैक) प्रोजेक्ट्स को निशाना बनाते हैं। मार्च 2025 में भी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने जाफर एक्सप्रेस ट्रेन के अपहरण की जिम्मेदारी ली थी, जिसमें 31 लोगों की मौत हुई थी और 300 से ज्यादा यात्री बंधक बनाए गए थे।

एरिजोना में हेलीकॉप्टर शूट ऑपरेशन के दौरान हुआ क्रैश, पायलट और एक पुलिसकर्मी की मौत

एरिजोना , एजेंसी। अमेरिका के एरिजोना में दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां राज्य के पब्लिक सेफ्टी विभाग का एक रेंजर हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया है। इस हादसे में हेलीकॉप्टर सवार पायलट और एक पुलिस अधिकारी की मौत हो गई है। हादसा फ्लैगस्टाफ क्षेत्र में एक एक्टिव शूट (सक्रिय गोलीबारी) की स्थिति के दौरान हुआ, जब हेलीकॉप्टर क्रू स्थानीय पुलिस की सहायता के लिए जा रहा था। एरिजोना डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक सेफ्टी के अनुसार, रेंजर हेलीकॉप्टर का क्रू फ्लैगस्टाफ पुलिस डिपार्टमेंट और अन्य एजेंसियों को सपोर्ट करने के लिए भेजा गया था।

टैक्टिकल एयर सपोर्ट दे रहा था हेलीकॉप्टर : हेलीकॉप्टर टैक्टिकल एयर सपोर्ट प्रदान कर रहा था, यानी जमीन पर चल रही गोलीबारी की स्थिति में हवाई निगरानी और सहायता दे रहा था। लेकिन दुर्भाग्य से, ऑपरेशन के दौरान ही हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया। विभाग के सार्जेंट कैमरन ली ने एक आधिकारिक बयान में कहा, 'यह बेहद दुखद है कि इस घटना के दौरान हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया, जिसमें पायलट और हेलीकॉप्टर में मौजूद पुलिसकर्मी/पैरामेडिक दोनों की मौत हो गई।'

क्रैश की शुरू हुई जांच : अभी तक पायलट और पुलिस अधिकारी के नाम जारी नहीं किए गए हैं। परिवारों को सूचना देने और अन्य औपचारिकताओं के बाद ही नाम सार्वजनिक किए जाएंगे। क्रैश की सटीक वजह अभी स्पष्ट नहीं है। विभाग ने इसकी जांच के लिए फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (स्र) और नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड के साथ मिलकर काम शुरू कर दिया है। जांच पूरी होने के बाद ही क्रैश के कारणों का पता चलेगा। घटनास्थल पर किसी अन्य व्यक्ति के घायल होने की कोई सूचना नहीं है।

एयर रेस्क्यू यूनिट के लिए बड़ा झटका है हादसा : बता दें कि, एयर रेस्क्यू यूनिट (रेंजर यूनिट) को विशेष ट्रेनिंग दी जाती है। यह यूनिट पहाड़ी इलाकों में बचाव कार्य, पानी में रेस्क्यू, हाई-रिस्क सर्च ऑपरेशन और अन्य आपात स्थितियों के लिए तैयार रहती है। ऐसे में यह हादसा विभाग के लिए बहुत बड़ा झटका है, क्योंकि यह यूनिट अक्सर जानलेवा स्थितियों में भी सुरक्षित रूप से काम करती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने ट्रम्प आरएक्स नाम की सरकारी वेबसाइट लॉन्च की

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने गुरुवार को ट्रम्प आरएक्स नाम की एक सरकारी वेबसाइट लॉन्च की। ट्रम्प का दावा है कि यह प्लेटफॉर्म अमेरिकियों को सस्ती दवाएं दिलाने में मदद करेगा और इससे हेल्थकेयर खर्च कम होगा। व्हाइट हाउस परिसर में वेबसाइट का अनावरण करते हुए ट्रम्प ने कहा, 'आप बहुत सारा पैसा बचाने वाले हैं। यह पूरे हेल्थकेयर सिस्टम के लिए भी अच्छा है।'

ट्रम्प आरएक्स सीधे दवाएं नहीं बेचती। यह वेबसाइट एक तरह से क्लीयरिंगहाउस की तरह काम करती है, जो यूजर्स को दवा कंपनियों की अपनी वेबसाइटों पर भेजती है, जहां वे दवाएं खरीद सकते हैं। इसके साथ ही रिटेल फार्मेसी में इस्तेमाल के लिए कूपन भी उपलब्ध कराए जाते हैं। लॉन्च के समय प्लेटफॉर्म पर 40 से ज्यादा दवाएं शामिल हैं। इनमें वजन घटाने की चर्चित दवाएं ओजेम्पिक और वेगोवी भी शामिल हैं,

जिनकी कीमतों को लेकर अमेरिका में लंबे समय से बहस होती रही है। यह पहल ऐसे समय में सामने आई है, जब अमेरिका में महंगाई और जीवनयापन की लागत बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनी हुई है। नवंबर में होने वाले मिडटर्म चुनावों से पहले रिपब्लिकन पार्टी के लिए दवाओं, हेल्थकेयर, घर, किराया और ग्रॉसरी की बढ़ती कीमतें एक बड़ी चुनौती मानी जा रही हैं। ट्रम्प ने कहा कि दवाओं पर मिलने वाली छूट फार्मास्युटिकल कंपनियों पर उनके व्यक्तिगत दबाव का नतीजा है। उनका कहना है कि अमेरिकी लंबे समय से दवाओं के लिए जरूरत से ज्यादा कीमत चुका रहे हैं, जबकि दूसरे देशों में वही दवाएं सस्ती मिलती हैं।

ट्रम्प ने यह भी दावा किया कि अमेरिका में दवाओं की कीमतें कम होने से कंपनियां दूसरे देशों में कीमतें बढ़ा सकती हैं। उन्होंने कहा, 'हम दुनिया को सब्सिडी देकर थक चुके हैं।' राष्ट्रपति ने पहली बार सितंबर में ट्रम्पआरएक्स का जिक्र किया था। तब उन्होंने बताया था कि दवा कंपनियों के साथ 15 से ज्यादा समझौते किए गए हैं, जिनका मकसद अमेरिका में दवाओं की कीमतें विकसित देशों में सबसे कम दरों के बराबर लाना है। ट्रम्प आरएक्स का लॉन्च कई बार टल चुका था। पिछले साल सेंटर फॉर मेडिकेयर एंड मेडिकेड सर्विसेज के प्रमुख मेहमत ओज ने कहा था कि वेबसाइट साल के अंत तक शुरू हो जाएगी, लेकिन बाद में जनवरी का प्रस्तावित लॉन्च भी टाल दिया गया।

लॉस एंजेलिस में किराना स्टोर में घुसी कार, 3 की मौत

लॉस एंजेलिस , एजेंसी। अमेरिका के लॉस एंजेलिस शहर में गुरुवार दोपहर एक बड़ा हादसा हो गया। एक तेज रफ्तार कार सीधे एक किराना स्टोर में जा घुसी। इस हादसे में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कम से कम छह लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। यह दुर्घटना दोपहर करीब 12 बजे वेस्टवुड इलाके में स्थित 99 रैंच मार्केट में हुई। लॉस एंजेलिस फायर डिपार्टमेंट के मुताबिक, हादसे के बाद तुरंत राहत और बचाव कार्य शुरू किया गया। घायलों को मौके पर ही प्राथमिक इलाज दिया गया और बाद में अस्पताल पहुंचाया गया। कुछ लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, कार चला रही व्यक्ति एक महिला थी, लेकिन यह साफ नहीं हो पाया है कि वह घायल हुई है या उसकी मौत हुई है।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

इंडिगो फ्लाइट में आई तकनीकी खराबी, पायलट ने कराई सुरक्षित लैंडिंग

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई एयरपोर्ट पर इंडिगो एयरलाइंस के एक विमान में लैंडिंग के दौरान तकनीकी खराबी आ गई। विमान के लैंडिंग गियर के लीवर में समस्या थी। यह विमान ए321 नियो था, जो फ्लाइट नंबर 6ई2157 के रूप में उड़ान भर रहा था। इसमें 210 से ज्यादा यात्री सवार थे। हालांकि, पायलट ने समझदारी से विमान को सुरक्षित रूप से एयरपोर्ट पर लैंड करा लिया। यह मामला शुक्रवार को पेश आया। मीडिया रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि लैंडिंग गियर का ऑटोमैटिक सिस्टम काम नहीं कर रहा था, इसलिए पायलट ने मैनुअल सिस्टम का इस्तेमाल किया। बाद में तकनीकी खराबी को ठीक कर लिया गया। दिक्कत दूर होने के बाद विमान ने दूसरी उड़ानें भी सामान्य रूप से पूरी कीं। इस मामले पर इंडिगो एयरलाइंस की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

मधेपुरा में मिड-डे-मील लेने से 70 से अधिक बच्चे बीमार, स्कूल में मचा हड़कंप

मधेपुरा (एजेंसी)। बिहार के मधेपुरा जिले में शनिवार को मिड-डे-मील खाने के बाद बड़ा हादसा सामने आया है। सदर प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय कारू टोला, साहुगढ़ में भोजन करने के बाद 70 से अधिक बच्चों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। खाना खाने के कुछ ही देर बाद बच्चों को उल्टी, पेट दर्द, चक्कर और घबराहट की शिकायत होने लगी, जिससे स्कूल परिसर में अफरा-तफरी मच गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बच्चों की हालत तेजी से बिगड़ती देख शिक्षकों ने तुरंत स्थानीय प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग को सूचना दी। इसके बाद एंबुलेंस और निजी वाहनों की मदद से सभी बीमार बच्चों को मधेपुरा सदर अस्पताल पहुंचाया गया। अस्पताल में डॉक्टरों की टीम ने तत्काल इलाज शुरू किया। डॉक्टरों का कहना है कि अधिकांश बच्चों की हालत अब स्थिर है और वे खतरे से बाहर हैं। हालांकि, इलाज के दौरान एक बच्ची की स्थिति गंभीर बताई जा रही है, जिसे विशेष निगरानी में रखा गया है। घटना की सूचना मिलते ही बच्चों के परिजन बड़ी संख्या में अस्पताल पहुंच गए, जिससे वहां भी तनावपूर्ण माहौल बन गया। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, मिड-डे-मील में छिपकली गिरने की आशंका जताई जा रही है, जिसके कारण भोजन जहरीला हो सकता है। हालांकि, इस बात की आधिकारिक पुष्टि जांच रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगी। स्कूल प्रशासन ने एहतियातन भोजन वितरण तुरंत रोक दिया और बचे हुए खाने को सुरक्षित रख लिया गया है, ताकि उसकी जांच की जा सके।

अजित पवार की मौत पर बोले रोहित पवार- मौत को लेकर है संदेह, 10 फरवरी को प्रेजेंटेशन देंगे

मुंबई (एजेंसी)। एनसीपी (एसपी) नेता रोहित पवार ने शनिवार को अजित पवार की मौत को लेकर कहा कि महाराष्ट्र के पूर्व उपमुख्यमंत्री अजित पवार की विमान दुर्घटना में हुई मौत की परिस्थितियों को लेकर सभी के मन में अनेक सवाल और संदेह हैं। ऐसे में वो 10 फरवरी को मुंबई में एक डिटेल प्रेजेंटेशन प्रस्तुत करेंगे और बताएंगे कि हादसा कैसे और क्यों हुआ। उन्होंने यह बात बारामती में जिला परिषद चुनाव में मतदान करने के बाद पत्रकारों के समक्ष कही। दरअसल महाराष्ट्र में शनिवार को 12 जिला परिषद और 125 पंचायत समितियों के लिए वोटिंग हुई। यहां बताते चलें कि पहले ये चुनाव 5 फरवरी को होने वाले थे, लेकिन 28 जनवरी को बारामती में हुए विमान हादसे में अजित पवार की मौत के बाद चुनाव टल गए थे। यहां रोहित पवार ने कहा कि अजित पवार चाह रहे थे कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अलग-अलग गुट एक हों। इसलिए विलय की कोशिशें आगे भी जारी रहेंगी। उन्होंने कहा कि अजित दादा दिल से चाहते थे कि सभी एक परिवार की तरह साथ आएं और आज सभी साथ आए हैं। परिवार अब भी एकजुट है और आगे भी उसी तरह प्रयास जारी रहेंगे।

बच्चों को चढ़ाया गया एचआईवी संक्रमित रक्त, हाईकोर्ट के आदेश पर एफआईआर दर्ज

रांची (एजेंसी)। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में थैलेसीमिया से पीड़ित पांच मासूम बच्चों को एचआईवी संक्रमित रक्त चढ़ाए जाने के गंभीर मामले में झारखंड हाईकोर्ट के सख्त रुख के बाद आखिरकार प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। हाईकोर्ट के निर्देश पर चाईबासा सदर थाना में सदर अस्पताल के ब्लड बैंक के तत्कालीन लैब टेक्नीशियन मनोज कुमार समेत अन्य संबंधित कर्मियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। यह घटना अक्टूबर 2025 की बताई जा रही है। चाईबासा सदर अस्पताल में 5 से 7 वर्ष की आयु के पांच बच्चों को नियमित ब्लड ट्रांसफ्यूजन के दौरान एचआईवी संक्रमित रक्त चढ़ा दिया गया। बाद में जब जांच कराई गई तो सभी बच्चों के एचआईवी पॉजिटिव होने की पुष्टि हुई, जिससे पूरे जिले में हड़कंप मच गया। बच्चों के परिजनों ने आरोप लगाया कि ब्लड बैंक में रक्त की जांच और स्क्रीनिंग प्रक्रिया में गंभीर लापरवाही बरती गई। मामले की सुनवाई के दौरान झारखंड हाईकोर्ट के जस्टिस गौतम कुमार की अदालत ने इसे अत्यंत गंभीर और मानव जीवन से जुड़ा मामला बताया। अदालत ने स्पष्ट निर्देश दिया कि पीड़ित परिवार संबंधित थाना में शिकायत दर्ज कराएं और थाना प्रभारी तत्काल एफआईआर दर्ज करें। कोर्ट ने यह भी कहा कि इस तरह के मामलों में देरी अस्वीकार्य है और इससे पीड़ितों को न्याय मिलने में बाधा आती है। अदालत के आदेश के बाद पीड़ित बच्चों में से एक की मां की ओर से दिए गए आवेदन पर चाईबासा सदर थाना में मामला दर्ज किया गया। सदर थाना प्रभारी तरुण कुमार ने बताया कि आवेदन में आरोप लगाया गया है कि ब्लड बैंक में निर्धारित मानकों के अनुसार रक्त की जांच नहीं की गई, जिसके कारण संक्रमित रक्त बच्चों को चढ़ा दिया गया और वे एचआईवी से संक्रमित हो गए। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और संबंधित दस्तावेजों व कर्मचारियों की भूमिका की पड़ताल की जा रही है। हाईकोर्ट ने इस बात पर भी नाराजगी जताई थी कि घटना उजागर होने के बावजूद एफआईआर दर्ज करने में करीब चार महीने की देरी हुई। अदालत ने इसे सिस्टम की गंभीर विफलता करार दिया था। मामले के सामने आने के बाद राज्य सरकार ने प्रत्येक पीड़ित परिवार को 2-2 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की थी।

विधान परिषद में टोपी उतरवाने का सीएम नीतीश का वीडियो वायरल, सियासत गरमाई

चर्चा है- यह बीजेपी की संगत का असर, तिलक लगवाने से भी कर चुके हैं इनकार

पटना (एजेंसी)। बिहार के सीएम नीतीश कुमार का एक वीडियो काफी वायरल हो रहा है। सीएम नीतीश ने विधान परिषद में पूर्व मंत्री, राजद नेता और वर्तमान एमएलसी को टोपी उतारने के लिए कह दिया। इसका वीडियो सामने आया तो अब राजनीति गरमा गई। कहा जा रहा है कि नीतीश अब एनडीए के साथ हैं और उनपर बीजेपी की राजनीति का असर हो गया है। यही कारण है कि नीतीश कुमार टोपी पहनने, टोपी ट्रांसफर करने से लेकर उतरवाने तक पर उतर आए हैं। क्या यह सच है?

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बजट सत्र में चर्चा के दौरान बीते 5 फरवरी को बिहार सरकार के पूर्व मंत्री और राजद के नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी अपना वक्तव्य विधान परिषद में दे रहे थे। इस दौरान सीएम नीतीश कुमार भी वहां मौजूद थे। विधान परिषद में टोपी पहनकर आए अब्दुल बारी सिद्दीकी से सीएम नीतीश ने कहा कि यह टोपी क्यों पहने हैं? हटाइये ना। इस पर अब्दुल बारी ने अपनी टोपी उतार दी और कहा कि लीजिए आपका हुकुम सर आंखों पर, मैं अपनी टोपी उतार देता हूं। वैसे टोपी उतरवाना एक मुहावरा है। बस यहीं से यह छोटा सा वाकया बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन गया और बिहार की सियासत गर्म गई।

एक बार फिर से टोपी उतरवाने की चर्चा करते हुए सीएम नीतीश को विपक्षी दल अपने निशाने पर ले रहे हैं। उनकी राजनीति में बदलाव से जोड़कर इसे देखा जा रहा है और बीजेपी की संगत का असर कहा जा रहा है। अब जब बात खुली है और टोपी की सियासत को हवा दे दी गई है तो टीका लगाने से नीतीश कुमार के इनकार करने का वाकया भी है। ऐसा बीते साल हुआ था और वह भी सीतामढ़ी में माता जानकी से जुड़े एक कार्यक्रम में।

नीतीश कुमार ने सीतामढ़ी में 8 अगस्त 2025 को मंदिर में पूजा के दौरान 'टीका' लगाने से इनकार कर दिया था। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच जब पुजारी सीएम नीतीश कुमार को तिलक लगाने आए तो उन्होंने अपना सिर पीछे कर लिया और तिलक लगवाने से इनकार कर दिया। खास बात यह कि इस कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद थे। दरअसल, सीतामढ़ी में टीका लगाने से इनकार करने की घटना के कुछ ही दिनों बाद 21 अगस्त 2025 को पटना के एक मदरसा कार्यक्रम में नीतीश कुमार ने टोपी पहनने से भी इनकार किया था। चर्चा उनके उस बयान की होने लगी जो उन्होंने 2013 में दिया था। विपक्षी दलों और सोशल मीडिया पर इन दोनों घटनाओं को नीतीश कुमार के पुराने स्टैंड से जोड़कर देखा गया।

राजस्थान के टाइगर रिजर्व में रील बनाने, शूट व सेल्फी लेने पर लगा बैन

आदेश का पालन नहीं करने पर पर्यटकों के खिलाफ होगी कानूनी कार्रवाई

सवाई माधोपुर (एजेंसी)। राजस्थान के सबसे बड़े रणथंभौर टाइगर रिजर्व समेत कुल चार टाइगर रिजर्व में रील बनाने, वीडियो शूट करने और सेल्फी लेने जैसी गतिविधियों पर रोक लगा दी है। यह कदम सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन के तहत उठाया है, जिससे वन्यजीवों के प्राकृतिक व्यवहार में कोई बाधा न आए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सफारी के पर्यटक और गाइड मोबाइल नहीं ले जा सकेंगे। वन विभाग ने सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का हवाला देते हुए आदेश जारी किया है। इसके तहत टाइगर रिजर्व में पोस्टर और फ्लैक्स भी लगा दिए गए हैं। साथ ही गाइड को भी निर्देश दिए हैं कि वे मोबाइल फोन के रोक संबंधी आदेश के बारे में टूरिस्ट ?स को भी अवगत करा दें। राजस्थान में फिलहाल चार टाइगर रिजर्व है। इनमें रणथंभौर टाइगर रिजर्व, सरिस्का टाइगर रिजर्व (अलवर), मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व (कोटा) और रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व (बूंदी) शामिल हैं। धौलपुर-करौली और कुंभलगढ़ को भी टाइगर रिजर्व बनाने की प्रक्रिया चल रही है। रिपोर्ट के मुताबिक टाइगर रिजर्व के अधिकारियों का कहना है कि मोबाइल के कारण कई पर्यटक जानवरों के बेहद करीब जाने की कोशिश करते हैं, जिससे जानवर परेशान होते हैं। सफारी गाड़ियां एक जगह इकट्ठी हो जाती हैं। इससे जंगल का शांत माहौल प्रभावित होता है और वन्यजीवों पर दबाव बढ़ता है। यह फैसला वन्यजीवों की सुरक्षा और प्राकृतिक वातावरण को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से लिया गया है। डीएफओ ने बताया कि आदेश का पालन नहीं करने पर वन विभाग की ओर से पर्यटकों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ऐसे पर्यटकों पर पेनल्टी लगाई जाएगी। यह 100 रुपए से लेकर हजारों में हो सकती है। इसके साथ ऐसे लोगों के खिलाफ वन विभाग एफआईआर भी दर्ज करा सकता है। हालांकि आदेश के तहत सफारी के दौरान सिर्फ मोबाइल फोन पर रोक रहेगी। डिजिटल कैमरे और डीएसएलआर कैमरे बिना किसी चार्ज के ले जा सकेंगे। साथ ही सैलानियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे वन्यजीवों के पास नहीं जाएं, अन्यथा कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

जोधपुर आ रहीं थाईलैंड की राजकुमारी, शाही अंदाज में किया जाएगा स्वागत, प्रशासन अलर्ट

-सिरिवन्नवारी सेना में मेजर हैं, घुड़सवारी, खेल, कला व संस्कृति में है गहरी रुचि

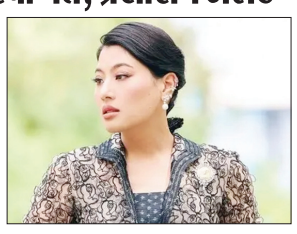

नई दिल्ली (एजेंसी)। थाईलैंड की राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना 8 फरवरी को जोधपुर के दो दिवसीय दौरे पर आ रही हैं। वे विशेष विमान से जोधपुर पहुंचेंगी। राजकुमारी के आगमन को लेकर जिला प्रशासन और संबंधित विभागों ने तैयारियां की हैं। उनके दौरे को लेकर पुलिस आयुक्त ने मारवाड़ इंटरनेशनल सेंटर में रॉयल थाई एंबेसी के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की सुरक्षा, आवागमन, ठहराव और भ्रमण को लेकर अलग-अलग अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजकुमारी के शाही स्वागत को लेकर प्रशासन अलर्ट है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एयरपोर्ट से लेकर राजकुमारी के ठहरने और भ्रमण करने वाले स्थानों तक विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ यातायात व्यवस्था को भी सुचारु रखने के निर्देश दिए हैं। राजकुमारी का स्वागत पारंपरिक और शाही अंदाज में किया जाएगा। राजकुमारी मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस और जसवंत थड़ा सहित प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण करेंगी। पुलिस आयुक्त ने विशेष सुरक्षा, विभागीय समन्वय और आमजन को न्यूनतम असुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए हैं।

बता दें राजकुमारी सिरिवन्नवारी केवल फैशन तक सीमित नहीं हैं। वे थाईलैंड की शाही सेना में मेजर के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा वे एक कुशल घुड़सवार हैं और खेल, कला व संस्कृति के क्षेत्र में उनकी गहरी रुचि है। राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना आधुनिक फैशन को पारंपरिक शिल्प से जोड़ने के लिए भी जानी जाती हैं। उनका खुद का लग्जरी फैशन ब्रांड है, जो दुनिया के कई देशों में लोकप्रिय है।

हिंदू राष्ट्र का सपना देखने वालों को नेपाल से सबक लेना चाहिए: अरशद मदनी

वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश मोहब्बत, सद्भाव और इंसाफ के रास्ते पर आगे बढ़ेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने हिंदू राष्ट्र की मांग को लेकर उन्होंने कहा कि हिंदू राष्ट्र का सपना देखने वालों को पड़ोसी देश नेपाल के इतिहास से सबक लेना चाहिए। मदनी ने कहा कि नेपाल में भी एक समय हिंदू राष्ट्र की व्यवस्था लागू की गई थी, लेकिन वह ज्यादा समय तक नहीं टिक सकी और आखिरकार वहां लोकतांत्रिक संविधान के तहत नई व्यवस्था अस्तित्व में आई। उनका कहना है कि यही उदाहरण बताता है कि किसी भी देश की तरक्की, स्थिरता और शांति लोकतंत्र और संविधान से ही संभव है, न कि किसी एक धर्म को राष्ट्र पर थोपकर।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मौलाना अरशद मदनी ने एक्स पर पोस्ट में लिखा कि नफरत के सौदागर और हिंदू राष्ट्र का सपना देखने वालों को नेपाल से सबक लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि जब-जब किसी देश में एक खास विचारधारा या धर्म को थोपने की कोशिश की गई, वहां अंततः वह व्यवस्था ढह गई और जनता ने लोकतांत्रिक मूल्यों को चुना। मदनी ने कहा कि नेपाल में हाल के समय में हिंदू राष्ट्र की स्थापना की गई थी, लेकिन अंततः वहां यह व्यवस्था समाप्त हो गई और एक लोकतांत्रिक संविधान के तहत नई राजनीतिक व्यवस्था बनी। उन्होंने कहा कि यह साफ संकेत है कि आज की वैश्विक परिस्थितियों में किसी भी देश की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब वहां संविधान, लोकतंत्र और सभी नागरिकों के समान अधिकारों की रक्षा की जाए।

मौलाना मदनी ने कहा कि भारत में भी कुछ सांप्रदायिक शक्तियां और संगठन देश को हिंदू राष्ट्र बनाने का सपना देख रहे हैं, लेकिन उनकी यह साजिश कभी सफल नहीं होगी। उन्होंने दो टूक कहा कि जमीयत उलेमा-ए-हिंद सेक्युलरिज्म और भारतीय संविधान की रक्षा के लिए अंतिम सांस तक संघर्ष करती रहेगी। उन्होंने कहा कि भारत की पहचान विविधता, सहअस्तित्व और संवैधानिक मूल्यों से है और इसे किसी भी सूरत में बदला नहीं जा सकता है। मदनी ने इस्लाम और मुसलमानों को लेकर कहा कि कुछ ताकतें इस्लाम और मुसलमानों दोनों को मिटाने की कोशिश कर रही हैं, लेकिन उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि इस्लाम का चिराग कभी बुझ नहीं सकता। उन्होंने इतिहास का हवाला देते हुए कहा कि जिन्होंने भी इस्लाम को मिटाने की कोशिश की वे खुद मिट गए। इस्लाम हमेशा कायम रहा है और रहेगा।

मदनी ने मुसलमानों से निराश न होने की अपील भी की। उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात से घबराने या मायूस होने की जरूरत नहीं है। इतिहास बताता है कि जो कौमें अपनी पहचान, संस्कृति और धर्म के साथ जीना चाहती हैं, उन्हें कुर्बानियां देनी पड़ती हैं। उन्होंने कहा कि मुसलमान एक जीवित कौम हैं और जीवित कौमें हालात से हार मानने के बजाय समझदारी, दूरदर्शिता और सही रणनीति से आगे बढ़ती हैं। अपने पोस्ट के आखिर में मदनी ने भरोसा जताया कि एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब जुल्म का अंत होगा और अत्याचार करने वालों के गले में जंजीरें होंगी। उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश हिंदुस्तान फिर से प्यार, मोहब्बत, सद्भाव और इंसाफ के रास्ते पर आगे बढ़ेगा।

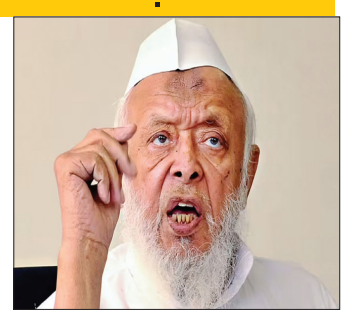

भारत-अमेरिका ट्रेड डील पर बोले जयराम- हाउडी मोदी पर आखिरकार भारी पड़ा नमस्ते ट्रंप

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। पार्टी का कहना है कि दोनों देशों के बीच जारी हालिया संयुक्त बयान से यह साफ हो गया है कि सरकार की गले मिलने वाली कूटनीति का देश को कोई ठोस लाभ नहीं मिला। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने तंज कसते हुए कहा कि 'हाउडी मोदी' पर आखिरकार 'नमस्ते ट्रंप' भारी पड़ गया है।

गौरतलब है कि 'नमस्ते ट्रंप' और 'हाउडी मोदी' अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पिछले कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिका संबंधों के प्रतीक माने गए थे। 'नमस्ते ट्रंप' कार्यक्रम का आयोजन फरवरी 2020 में अहमदाबाद में हुआ था, जबकि 'हाउडी मोदी' सितंबर 2019 में ह्यूस्टन में आयोजित किया गया था। इन आयोजनों को दोनों देशों के मजबूत रिश्तों का सार्वजनिक प्रदर्शन माना गया।

जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर जारी एक पोस्ट में कहा, कि अमेरिका-भारत के हालिया संयुक्त वक्तव्य में कई अहम पहलुओं पर स्पष्टता नहीं है, लेकिन जो तथ्य सामने आए हैं, वे भारत के हित में नहीं दिखते। उन्होंने दावा किया कि इस समझौते के तहत भारत अब रूस से तेल आयात बंद करने की दिशा में बढ़ेगा। साथ ही अमेरिका ने यह भी संकेत दिया है कि यदि भारत प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रूस से तेल खरीदता है, तो उस पर 25 प्रतिशत तक का दंडात्मक शुल्क दोबारा लगाया जा सकता है।

कांग्रेस नेता ने यह भी आरोप लगाया कि भारत, अमेरिकी किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए आयात शुल्क में कटौती करेगा, जिसका सीधा नुकसान भारतीय किसानों को होगा। रमेश के अनुसार, अमेरिका से भारत का वार्षिक आयात लगभग तीन गुना तक बढ़ सकता है, जिससे भारत का लंबे समय से बना आ रहा वस्तुओं का व्यापार अधिशेष समाप्त हो जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका को भारत की आईटी और अन्य सेवाओं के निर्यात को लेकर अब भी अनिश्चितता बनी रहेगी। संयुक्त बयान का हवाला देते हुए रमेश ने दावा किया कि भारत के अमेरिका को वस्तुओं के निर्यात पर पहले की तुलना में अधिक शुल्क लगाए जाने की आशंका है। कांग्रेस का आरोप है कि सरकार ने कूटनीतिक दिखावे और बड़े आयोजनों पर तो जोर दिया, लेकिन ठोस आर्थिक और व्यापारिक लाभ सुनिश्चित करने में विफल रही। जयराम रमेश ने तंज कसते हुए कहा कि गले मिलने, हाथ मिलाने और तस्वीरें खिंचवाने से देश का हित सुरक्षित नहीं होता। उन्होंने कहा कि 'हाउडी मोदी' पर 'नमस्ते ट्रंप' भारी पड़ गया और अब हालात ऐसे हैं कि 'दोस्त-दोस्त न रहा' जैसी स्थिति बनती दिख रही है।

इस्लामाबाद की मस्जिद पर हमले के बाद कश्मीर में लगे मुनीर और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे

श्रीनगर (एजेंसी)। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में एक शिया मस्जिद पर हुए भीषण आत्मघाती हमले की गूँज शुक्रवार को कश्मीर घाटी की सड़कों पर सुनाई दी। इस्लामाबाद के तरलाई इलाके में स्थित खादिजा तुल कुबरा मस्जिद में जुमे की नमाज के दौरान हुए इस धमाके में 31 लोगों की मौत और 169 से अधिक लोगों के घायल होने की खबर ने सरहद के इस पार भी लोगों को झकझोर कर रख दिया है। इस पवित्र स्थल पर हुए रक्तपात के विरोध में जम्मू-कश्मीर के शिया समुदाय और आम नागरिकों ने स्वतःस्फूर्त विरोध प्रदर्शन कर पाकिस्तान सरकार के खिलाफ कड़ा आक्रोश व्यक्त किया है।

कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में हुए ये प्रदर्शन किसी राजनीतिक दल या संगठन के आह्वान पर नहीं थे, बल्कि यह लोगों के भीतर उपजे डर और असुरक्षा की भावना का परिणाम थे। हमले की खबर फैलते ही बारामूला के चैनाबल पट्टन और डाइवर परिहासपोरा में बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उतर आए। प्रदर्शनकारियों ने कुछ समय के लिए रास्तों को अवरुद्ध किया और पाकिस्तान के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। श्रीनगर के शिया बहुल इलाकों जैसे इमामबाड़ा जदीबल और हरवान में भी ऐसा ही नजारा देखने को मिला, जहां लोगों ने पाकिस्तान सरकार की विफलता पर कड़ा विरोध दर्ज कराया। बांदीपोरा के इंदरकोट-सुंबल इलाके में शाम को कैंडल मार्च निकालकर मृतकों को श्रद्धांजलि दी गई और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाए गए। सुरक्षा विशेषज्ञों और राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि घाटी में पाकिस्तान के खिलाफ यह स्वर एक बड़े बदलाव का संकेत है। दशकों से पाकिस्तान खुद को कश्मीर के मुसलमानों के मसीहा और रक्षक के रूप में पेश करने का प्रोपेगेंडा चलाता रहा है, लेकिन उसके अपने ही देश में शिया समुदाय पर बार-बार होने वाले लक्षित हमलों ने इस दावे की पोल खोल दी है। जानकारों का कहना है कि ये प्रदर्शन पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व और विशेषकर आर्मी चीफ आसिम मुनीर के लिए एक बड़ा झटका हैं, क्योंकि अब कश्मीर के लोग सीमा पार की सांप्रदायिक अस्थिरता को पहचान रहे हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, पाकिस्तान में मस्जिदों और धार्मिक जुलूसों पर हो रहे आतंकी हमले अब कश्मीर में उल्टा असर डाल रहे हैं। पहले जहाँ सीमा पार की घटनाओं का इस्तेमाल कुछ वर्गों में सहानुभूति पैदा करने के लिए किया जाता था, वहीं अब वही घटनाएँ नाराजगी में बदल रही हैं। प्रदर्शनों में शामिल लोगों का सीधा सवाल था कि जो देश अपनी राजधानी में इबादत कर रहे लोगों और अल्पसंख्यकों को सुरक्षा नहीं दे पा रहा, वह दूसरों के अधिकारों की बात करने का नैतिक आधार कैसे रख सकता है। इन प्रदर्शनों को सीमा पार बैठे उन तत्वों के लिए भी एक गंभीर चेतावनी माना जा रहा है जो कश्मीर में धार्मिक भावनाओं को भड़काने का काम करते हैं।

इस बार विधानसभा चुनाव जीतकर ममता सीएम बनी तो तोड़ देंगी शीला दीक्षित का रिकॉर्ड

-बीजेपी और पीएम मोदी की लहर के बावजूद ममता ने टीएमसी को मजबूत बनाए रखा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में इस साल अप्रैल में विधानसभा चुनाव होना है। सीएम ममता बनर्जी अगर अगले कार्यकाल में भी सीएम बनती हैं तो वे दिल्ली की भूतपूर्व सीएम शीला दीक्षित का रिकार्ड तोड़ देंगी। शीला दीक्षित 15 साल 25 दिन तक सीएम रही थीं। बंगाल में फिलहाल ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस एकमात्र पार्टी है, जो बीजेपी से लोहा लेती रही हैं। ममता ने अपने दम पर साढ़े 3 दशक से ज्यादा समय तक बंगाल में शासन करने वाले वामपंथी दलों के ग्रुप- लेफ्ट फ्रंट को सत्ताच्युत करने में पहली बार 2011 में सफलता पाई थी। तब से वे बंगाल पर एकछत्र राज कर रही हैं। देश में बीजेपी के उभार और पीएम मोदी की लहर के बावजूद ममता ने टीएमसी को अभी तक मजबूत बनाए रखा है। बंगाल के पिछले विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने इस बार की तरह ही पूरी ताकत झोंक दी थी। पीएम मोदी से लेकर बीजेपी के तमाम छोटे-बड़े नेताओं ने बंगाल के तूफानी दौरे किए थे। नतीजे आए बीजेपी की सीटें विधानसभा में 2 से बढ़ कर 77 हो गईं। टीएमसी की सीटें भी घटीं, लेकिन ममता तीसरी बार सरकार बनाने में सफल रही।

विश्लेषकों ने इसे उनका करिश्मा नहीं, बल्कि मुस्लिम वोटों का ममता के पक्ष में इकतरफा ध्रुवीकरण माना। बंगाल में तकरीबन 30 फीसदी मुस्लिम आबादी है। टीएमसी को 2021 में 49 फीसदी वोट मिले थे। बीजेपी टीएमसी से 10 फीसदी वोट लाकर दूसरे नंबर पर रही। बीजेपी के प्रबल विरोध के बावजूद अपनी जीत से उत्साहित ममता ने पीएम बनने के सपने भी देखने शुरू कर दिए थे।

रिपोर्ट के मुताबिक शीला दीक्षित सबसे लंबे समय तक दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं। वे 3 दिसंबर 1998 से 28 दिसंबर 2013 तक दिल्ली की सीएम रहीं। उनका कुल कार्यकाल 15 साल 25 दिन का रहा। उनके नाम एक और रिकार्ड है। दिल्ली में पुरुष और महिला मुख्यमंत्रियों में उनका नाम सर्वाधिक समय तक सीएम रहने वालों में सबसे ऊपर है। सीएम के रूप में उन्होंने दिल्ली को विश्वस्तरीय शहर बनाने में अहम योगदान दिया। शीला दीक्षित के बाद महिला मुख्यमंत्रियों में सर्वाधिक समय का रिकार्ड ममता बनर्जी ने बना लिया है। ममता ने करीब 14 साल से अधिक का रिकार्ड बना लिया है, जो शीला दीक्षित से कुछ ही महीने कम है। लंबे समय तक सीएम रहने वाली तीसरी सीएम रहीं जे जयललिता वे 14 साल और 124 दिन तक तमिलनाडु की सीएम रही थीं।

बता दें देश में अब तक कुल 18 महिला मुख्यमंत्री बनी हैं। पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में सुचेता कृपलानी का नाम आता है। वे 1963 में यूपी की सीएम बनीं। दूसरी सीएम रहीं शीला दीक्षित। वे दिल्ली 15 साल से अधिक समय तक मुख्यमंत्री रहीं। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी 2011 से अब तक सीएम पद पर हैं। अन्य महिला मुख्यमंत्रियों में सुचेता कृपलानी, नंदिनी सत्पथी (ओडिशा), शशिकला काकोडकर (गोवा), सैयदा अनवरा तैमूर (असम), वीए जानकी रामचंद्रन (तमिलनाडु), जे जयललिता (तमिलनाडु), मायावती (उत्तर प्रदेश), राजिंदर कौर भट्टल (पंजाब), राबड़ी देवी (बिहार), सुषमा स्वराज (दिल्ली), उमा भारती (मध्य प्रदेश), वसुंधरा राजे (राजस्थान), आनंदीबेन पटेल (गुजरात), मेहबूबा मुफ्ती (जम्मू-कश्मीर), आतिशी (दिल्ली) और रेखा गुप्ता (दिल्ली)।

ममता बनर्जी की मूल पार्टी कांग्रेस रही है। बाद में उन्होंने अपनी पार्टी- टीएमसी बनाई। वामपंथी शासन से लगातार लडती रहीं। आखिरकार उन्हें 2011 में वामपंथी शासन को खत्म करने में सफलता मिली। तब से उन्होंने दो अहम काम किए हैं। आधी आबादी के रूप में ख्यात महिला शक्ति को अपने साथ जोड़े रखने के लिए उन्होंने उनके लिए गर्भावस्था से लेकर बुढ़ापे तक के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चलाईं। उनकी लक्खी भंडार योजना बमाल की महिलाओं में सबसे पापुलर है। इसके अलावा भी उन्होंने कई योजनाएं युवाओं के लिए भी चलाई हैं। नतीजा यह कि मौजूदा विधानसभा में बीजेपी को छोड़ कांग्रेस और वामपंथी पार्टियों के साथ दूसरी विरोधी भी शून्य पर हैं।

ममता बनर्जी यह भी समझ रही हैं कि बीजेपी से मुकाबला इस बार पहले के मुकाबले थोड़ा कठिन है। इसकी वजह यह है कि पिछली बार उन्हें जो 49 फीसदी वोट मिले थे, उसमें 30 फीसदी तो अकेले मुस्लिम थे। बीजेपी को सत्ता से दूर रखने के लिए मुसलमानों ने कांग्रेस और वामपंथियों का मोह त्याग कर एकमुश्त टीएमसी को वोट किया था यानी 70 फीसदी हिन्दुओं में सिर्फ 19 फीसदी वोट ही उन्हें मिले थे। इस बार टीएमसी से निष्कासित नेता हुमायू कबीर के अलग पार्टी बना लेने से मुस्लिम वोटों में विभाजन का खतरा पैदा हो गया है। ओवैसी ने भी हुमायू कबीर से हाथ मिला लिया है। यह मुस्लिम मतों में विभाजन का स्पष्ट संकेत है। तीसरा खतरा बन कर उभरी हैं ईडी और सीबीआई जैसी केंद्री जांच एजेंसियां उनसे ममता लगातार पंगा लेती रही हैं, लेकिन आई-पैक रेड मामले में उनकी परेशानी बढ़ सकती है।